निर्मला योग

द्विमासिक | वर्ष २ अंक ६ | सितम्बर-अक्टूबर 1983

ॐ त्वमेव साक्षात्, श्री कल्की साक्षात्, श्री सहस्रार स्वामिनी,
मोक्ष प्रदायिनी, माता जी, श्री निर्मला देवी नमो नमः ॥

परमपूज्य माताजी का पत्र

॥ श्री ॥

दि० १७-८-७८

मत्प्रिय रमेश व निमा !

अत्यन्त प्यार से भेजी हुई राखियाँ मिल गयीं। 'राखी' का मतलब है रक्षा करने वाली शक्ति। इस शक्ति का बन्धन बहुत ही जोरदार है। और अत्यन्त कोमल भी है। क्योंकि यह बहन के प्यार की निशानी है। जिसे एक बार राखी बाँधी वहाँ फिर निर्मल रक्षा का स्थान स्थापित किया।

यह परम्परा है। अब मनुष्य को संवेदन क्षमता इतनी कम हो गयी है, कि राखी बाँधना यह एक यान्त्रिक क्रिया (मशीनवर्क) हो गयी है। जहाँ श्रद्धा की गरिमा नहीं है वहाँ सारी सुन्दर मानवी परम्पराएँ शुष्क और बेजान हो जाती हैं।

सहजयोगियों के बन्धन में ही हमने संसार में जन्म लिया है। और पूरे रूप से उन्हीं के बन्धन में जी रहे हैं। हम तो desireless तब आप ही की इच्छाओं पर हमारा सब कुछ अवलम्बित (depend) है। राखी के साथ कुछ माँगना जरूरी है। वह सहज योगियों से पूछकर बताइये। सभी मिलकर एक पत्र लिखकर जो माँगना है वह लिखिए। हमारी तबियत बिल्कुल ठीक है क्योंकि आप सबकी वह इच्छा है। कान का एक छोटा-सा operation है। कोई चिन्ता की बात नहीं है। दूसरा ये कि, बिल्कुल तकलीफ़ नहीं है। कहना यह है कि चिन्ता की कोई बात नहीं है।

"रक्षा-बन्धन बहुत महत्त्वपूर्ण दिन है। उस दिन परिपूर्णता की माँग करनी चाहिए। बड़ी-बड़ी योजनाएँ बनानी चाहिएँ। अपना लक्ष्य हमेशा ऊँची बातों पर रखना चाहिए। छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देकर सहजयोगियों को अपना लक्ष्य नष्ट नहीं करना चाहिये। अभी बहुत कुछ करना है। जिन सहजयोगियों ने प्रगति करी है उन्हें कार्यरत होना चाहिए। जनता का चित्त परमेश्वर प्राप्ति की ओर अग्रसर होना चाहिए। नये दो सेन्टर्स खोलने होंगे। लोगों की बीमारियाँ ठीक होनी चाहिएँ।

यह पत्र सभी सहजयोगियों को पढ़ने दीजिये।

आपको हमेशा याद करने वाली आपकी
माँ निर्मला

सम्पादकीय

न रोधयति मां योगो न सांख्यं धर्म एव च ।
न स्वाध्यायस्तपस्त्यागो नेष्टापूर्तं न दक्षिणा ॥१॥
व्रतानि यज्ञश्छन्दांसि तीर्थानि नियमा यमाः ।
यथावरून्धे सत्सङ्गः सर्वसङ्गापहो हि माम् ॥२॥

अनुच्छेद ७ पृष्ठ ६६, उद्धवगीता

भगवान श्री कृष्ण उद्धव जी को उपदेश देते समय कह रहे हैं कि योग, किसी तरह का भेदभाव, धार्मिकता, वेद अध्ययन, कष्ट सहना, सन्यास लेना, धार्मिक कार्य करना, सामाजिक कार्य करना, दान देना, प्रतिज्ञा करना, त्याग करना, गुप्त मन्त्रोच्चारण करना, तीर्थाटन करना, हर तरह के यम और नियम मुझे बाँध नहीं सकते हैं जितना कि ऐसे सन्तों का समागम जिससे निरासक्ति प्राप्त होती है ।

आज हम सभी परम सौभाग्यशाली हैं जब कि परमपूज्य श्री माताजी यह निरासक्ति खुलेआम लुटा रही हैं। इससे लाभान्वित होना और यह सन्देश हर कोने तक पहुँचाना ही हमारा परम कर्त्तव्य होना चाहिए ।

निर्मला योग

४३, बंगलो रोड, दिल्ली-११०००७

संस्थापक : परम पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी

सम्पादक मण्डल : डॉ शिव कुमार माथुर
श्री आनन्द स्वरूप मिश्र
श्री आर. डी. कुलकर्णी

प्रतिनिधि कनाडा : लोरी टोडरिक
४५१८ वुडग्रीन ड्राइव
वैस्ट वैन्कूवर,
बी.सी. बी. ७ एस. २ वी १

यू.एस.ए. श्रीमती क्रिस्टाइन पैट्रूनोया
२२५, ग्रदम्स स्ट्रीट, १/ई
ब्रुकलिन, न्यूयार्क-११२०१

भारत श्री एम० बी० रत्नान्नवर
१३, मेरवान मैन्सन
गंजवाला लेन, बोरीवली
(पश्चिमी) बम्बई-४०००९२
श्री राजाराम शंकर रजवाड़े
८४०, सदाशिव पेठ, पुणे-४११०३०

यू.के. श्री गेविन ब्राउन
ब्राउन्स जियोलॉजिकल इन्फ़र्मेशन
सर्विसेज़ लि.,
१६० नार्थ गावर स्ट्रीट
लन्दन एन.डब्लू. १ २ एन.डी.

इस अंक में . . . . . **पृष्ठ**

१. सम्पादकीय ... १
२. प्रतिनिधि ... २
३. परम पूज्य माताजी का प्रवचन ... ३
४. श्री यीशु का सन्देश एवं योग में स्थायित्व के विघ्न बाधाएँ ११
५. सहजयोग व शारीरिक चिकित्सा (२) ... २४
६. परम पूज्य माताजी का पत्र ... द्वितीय कवर
७. सन् १९८४ में परम पूज्य माताजी का महाराष्ट्र में कार्यक्रम चतुर्थ कवर

माताजी श्री निर्मला देवी का होली (२९-३-८३) के पर्व पर विश्व सहज मन्दिर, नई दिल्ली में दिया गया प्रवचन

होली के शुभ अवसर पर आज दिवाली मनाई जाएगी। होली के दिन आप जानते ही हैं कि होलिका को जलाया गया था। यह अग्नि का बड़ा भारी काम है, कार्य है क्योंकि अग्नि देवता ने होलिका को वरदान दिया था कि किसी भी हालत में वह जल नहीं सकती। और चाहे किसी भी तरह से मृत्यु आ जाए पर जल नहीं सकती। और वरदान देकर के वे बहुत पछताए क्योंकि प्रह्लाद को गोदी में लेकर वह बैठ गई। और अग्नि देवता के सामने बड़ा प्रश्न खड़ा हुआ। धर्म का प्रश्न था कि मैंने उसे यह वचन दे दिया कि मैं उसे जलाऊँगा नहीं, और इस वचन को मैं अब कैसे तोड़ूँ ? और प्रह्लाद, जो स्वयं साक्षात् अबोधिता हैं, जो साक्षात् गणेश का प्रादुर्भाव हैं, और उनको किस तरह से जलाया जाए ? उन्हें तो कोई नहीं जला सकता और मेरी भी शक्ति से परे है। यह तो मेरी शक्ति से भी परे है। तो उन्होंने विचार किया कि यह अहंकार कैसा ? कि इतनी बड़ी शक्ति के सामने मैं अपनी शक्ति भी, कौन-सी बात है, मेरी ऐसी कोई-सी भी शक्ति नहीं है जो इनके आगे चल सके, ये सर्वशक्तिमान हैं इनको तो मैं जला सकता ही नहीं चाहे कुछ भी कर लूँ। लेकिन इस वक्त दूसरा बड़ा भारी मेरे सामने प्रश्न है ? कि कर्त्तव्य और धर्म में से किसको मानूँ ? तो कर्त्तव्य और धर्म में जो कशमकश हुई, उस वक्त यह सोचना चाहिए कि धर्म कर्त्तव्य से ऊँचा है। धर्म, कर्त्तव्य एक सर्वसाधारण वस्तु से ऊँची चीज है। और उससे भी ऊँची चीज है आत्मा का तत्व। यानी जो छोटा, बारीकी में बँधा हुआ, सीमित, जो कुछ भी हमारा वलय है, गोल (Goal) है, उससे जो ऊँचा गोल (Goal) है, उससे जो ऊँचा वलय है, उसको करना अगर है, तो इस छोटे को छोड़ना पड़ेगा। और यही कृष्ण ने शिक्षा दी। कृष्ण ने कहा कि अगर आपको हित के लिए झूठ बोलना पड़े, तो आप झूठ बोलिए। सच बोलने की बात ठीक है, लेकिन किसी ऊँची चीज के लिए नीची चीज को छोड़ना पड़ेगा। जैसे कि कोई आदमी अब अन्दर आ जाए, और किसी को मारना चाहता है या कुछ करना चाहता है। एक तो उसकी अनाधिकार चेष्टा है। उसने आप से पूछा कि महाशय यहाँ अन्दर हैं ? तो आपने कहा कि हाँ हैं। मतलब सच कहना चाहिये, सच कह दिया। तो वह जाकर इसको मार डालेगा लेकिन उसकी जान बचाना, यह बहुत ऊँची चीज है, यह बहुत महत्वपूर्ण है, बड़ी चीज है। उस बड़ी बात के लिए, बड़े ध्येय के लिए या छोटी जो चीज है उसको छोड़ना पड़ेगा। यही कृष्ण ने अपने जीवन में अपनाया। कृष्ण के जीवन को बहुत कम लोग समझ पाये क्योंकि उस जमाने में धर्म की यह दशा हो गई थी कि लोग धर्म को बहुत ही ज्यादा गम्भीरतापूर्वक; बहुत उसको serious बनाकर सब बुड्ढाचारी थे—धर्म बहुत serious चीज है, उसमें आदमी को जो है बहुत ही serious रहना चाहिए। क्योंकि कर्मकाण्ड करना है, और कर्मकाण्ड करने में बड़ी आफ़त रहती है, कि अगर आपने इधर से उधर दीप जला दिया तो भगवान जी नाराज हो गये। इधर से उधर आपने अगर धूप-बत्ती जला दी, तो भगवानजी नाराज। अगर left hand (बाएँ हाथ) से आपने कुछ कर दिया तो गया काम से। इन सब बातों की वजह से लोगों में

conditioning (कट्टरता) आ गई और उस conditioning की वजह से लोग बहुत गम्भीरतापूर्वक धर्म करने लगे। इतने गम्भीर हो गये कि उसका आह्लाद, उसका उल्लास सब खत्म हो गया। राधा जी की, जो main(मुख्य)शक्ति थी, वह थी आह्लाद दायनी, सबको आह्लाद देना, यह उनकी main शक्ति थी। और फिर इसीलिए उन्होंने होली का त्यौहार मनाया। कृष्ण ने आकर के जितनी भी पूजाएँ थीं, सबको बन्द कर दिया। और कहा कि अब पूजा-बूजा मत करो तुम, और उस आत्मा की ओर बढ़ो, जिसे पाना है। और छोटी-छोटी चीजों में मत खोओ। क्षुद्र चीजों में नहीं खोना है। लेकिन ऊँची चीज की ओर अपनी दृष्टि लगानी है। अब जो आदमी कहता है, "झूठ तो मैं कभी बोलता नहीं साहब", कभी-कभी ऐसा आदमी over(अति) स्पष्टवक्ता भी हो जाता है और अहंकार में दूसरों को फँसाता भी है, या नहीं तो उसी में उसका जीवन सत्यानाश हो जाता है। सच भी क्यों बोलना, धर्म भी क्यों करना, कर्त्तव्य भी क्यों करना क्योंकि आपको आत्मा होना है। और किसी भी चीज से आप इस तरह बन्धन में फँस जाएँ और उससे आप को seriousness आप बुढ़ा जायें–इसको बुढ़ाना कहते हैं—उसका क्या फ़ायदा। तो धर्म जो है वह आदमी को बिल्कुल, पूरी तरह से एकदम जमा देता है, जैसे आइसक्रीम जम जाती है, ऐसे जमा देता है। उसमें शक्ति का सञ्चार कैसे हो? उसका आनन्द कैसे वह उठाए? तो उन्होंने रंग वगैरह खेलना शुरू किया। सारे रंग जो हैं वे भी देवी के रंग हैं, सारे। सातों रंगों के रंग से रंग खेला जाता है। सारे चक्र में रंग हो अपने को लो। खेलो, आह्लाद से, उल्लास, आनन्द से। गम्भीरतापूर्वक बैठने की कौन सी जरूरत है, अगर आप परमात्मा को पायें? वल्लभाचार्य जी के पास एक बार सूरदासजी गए। तो उनके सामने अपना रोना रोने लगे—बेचारे वे 'पार' नहीं थे, तो रोते ही रहते थे। तो रोना शुरू किया। तो वल्लभाचार्य तो साक्षात् श्री कृष्ण ही थे, यह आप जानते हैं तो उनसे रहा नहीं गया। उन्होंने कहा, "काहे घिघियावत हो?" मतलब, कि यह हर समय घिघियावते क्यों रहते हो? यह 'घिघियाने' के लिए और कोई शब्द भी नहीं मिलेगा कि हर समय यह रोने की क्या जरूरत है? परमात्मा के प्रेम में आदमी आनन्दविभोर हो जाता है। लेकिन यह अन्दर से आने वाली एक आनन्ददायनी शक्ति है, जिससे यह होना चाहता है कि यह बहुत-से लोग ढोलकी लेकर बजाते फिरते हैं, "हरे रामा, हरे कृष्णा" उस तरह की चीज नहीं। यह उसकी copy (नक़ल) है जो मैंने कल कहा कि reality (असलियत) और concept (मान्यता) में बहुत अन्तर है। जो असलियत है, उसमें आदमी विभोर होकर खुश होता है। उसमें कोई अश्लीलता नहीं है, कोई गन्दगी नहीं है। उसमें कोई जानबूझ करके नाटककारी नहीं है। अन्दर ही से आदमी खुश होकर के आनन्द और आह्लाद उल्लास को महसूस करता है। और वही चीज जो है, बाद में, अनेक आघातों से विचलित नहीं होती, टूटती नहीं है।

सब धर्मों में इसी प्रकार हो गया है। जैसे कि मुसलमानों में आपने देखा है कि वे लोग मारते हैं अपने आपको, "हाय हुसैन हम न हुये ....."यह रोने वाला धर्म, धर्म नहीं होता। जब धर्म में रोना ही है तो ऐसे धर्म में जाकर क्या करना है? वैसे तो रोना ही होता है। तो दुख पाने वाला, दुख देने वाला धर्म, धर्म नहीं होता। लेकिन सब धर्मों में ऐसी बातें आ गईं। हिन्दू धर्म में भी आ गई कि वह आदमी, जो बिल्कुल मरगिल्ला हो, वही बड़ा भारी साधूसन्त माना जाता है..... ....., वह मरगिल्ला होना चाहिए, उसकी हालत यह होनी चाहिए कि दरिद्रता होनी चाहिए, और वह ऐसी दशा में होना चाहिए कि आधा पागल, आधा अच्छा हो, कभी-कभी उठा dance (नाच) करना शुरू कर दिया या कभी रोने को बैठ गया, दुबला-

पतला, हड्डियाँ निकली हुई, पिचका हुआ मुंह, त्वचा में हजारों झुर्रियाँ पड़ी हुई, आँखें बिल्कुल बटन जैसी बाहर, निस्तेज। तन्दुरुस्ती चौपट और हर तरह की उसमें दुर्दशा। ऐसा आदमी कभी भी धार्मिक नहीं हो सकता। प्रसन्नचित्, शान्त, खिली हुई तबियत, खुला हुआ हृदय और प्रकाश जैसे ..... । तो होली के जैसा त्यौहार, जैसे कि कल मैंने कहा कि आज से यह तय करलें कि अब होली जो है, यह दीपावली हो जानी चाहिए। इस का आनन्द जो है विभोर होना चाहिए। होली का आनन्द सीमित है, जबकि हम एक ही होलिका जलाते हैं। लेकिन फिर वह collective consciousness (सामूहिक चेतना) में बहता है, जैसे हर आदमी, चाहे वह गँवार हो, भङ्गी हो, घर में कोई भी हो, तो जैसे हमारे खानदान में, लखनऊ में, जहाँ के रहने वाले हैं, ज़मींदार लोग हैं ये लोग, तो क्या मजाल कि जमादार बेचारे अन्दर भी आ जाएँ, घर के अन्दर भी आ जायें दहलीज लेकिन होली के रोज चाहे फिर कोई भी हो—मालिक हो चाहे नौकर हो चाहे कोई भी हो सब आपस में होली खेलते हैं यहाँ तक कि नौकर मालिक के कपड़े भी फाड़े तो कोई कुछ नहीं कहता। कहते हैं राम और इस तरह से एक समाजवाद और एक सामाजिक खुशी का त्यौहार अपने देश में शुरू हुआ। पर होली में भी आदमी फिर एक नीचे स्तर पर उतर जाना चाहता है, अश्लीलता पर आ जाता है। ऐसा हर एक जगह होता है, हर चीज सड़ने सी लग जाती है। सड़न इसलिए आती है क्योंकि उसमें जीवन्तता नहीं रहती। जिसमें जीवन्तता हो, वह चीज फिर सड़े नहीं। और इस तरह से जब होने लग जाता है तो वही चीज बहुत ही गन्दी और बुरी महक आने लगती है। जब होली का त्यौहार महाराष्ट्र में मनाया जाने लगा, तो बहुत-से लोगों ने इसका बहुत विरोध किया क्योंकि इसमें गाली गलौज, दंगेबाजी होती है। यू. पी. के लोगों को वहाँ भइया लोग कहते हैं। और महाराष्ट्र में मराठी में गालियाँ है ही नहीं, क़रीबन। ये सब जो गालियाँ होती हैं, गन्दी-गन्दी, तो मराठी लोग भी हिन्दी की ही गालियाँ देते हैं। उनके आने पर उन्होंने यही import (आयात) किया होगा! और अधिकतर गालियाँ हिन्दी की बोलते हैं और मराठी की गालियाँ होती ही नहीं। और पारसी लोग भी बहुत गालियाँ देते हैं। और हमारे पञ्जाब की गालियाँ कुछ-कुछ होती हैं। वह भी काफ़ी बम्बई में चलती हैं। तो यह गाली-गलौज आदि चीजें जो हैं यह है कि अन्दर की घबराहट जो है, उसे निकाल दीजिए, वगैरह-वगैरह। उसको निकाल देने से अच्छा होता है। पर यह बड़ी wrong (ग़लत) चीज है, यह कभी निकलती नहीं है, यह जबान पर चढ़ जाती हैं। हमने देखा है कि हमारे ससुराल में जो ज़मींदार हैं वहाँ, सिवाये हमारे husband (पतिदेव) को छोड़कर, वहाँ हर आदमी गाली के सिवाये बात ही नहीं करता। मतलब बड़ों से भी। उनको गाली देने में कुछ लगता नहीं, फ़ट से गाली दे देंगे। एक हमारे पति ही ऐसे हैं, वाकई में चुप-चाप। कभी भी मैंने उनके मुंह से गाली नहीं सुनी। आज तक कभी भी उन्होंने किसी को भी गाली नहीं दी। यह विशेष बात है। लेकिन अगर उनके घर में अगर किसी से बात करो, एक दो अगर गाली नहीं दी तो वे सोचते हैं कि उन्होंने प्रेम ही नहीं जताया। वहाँ तरीक़ा ही यह है कि दोस्त को भी अगर मिलेंगे तो पचास तो पहले गालियाँ देंगे, उस के बाद फिर गले मिलेंगे। यही चीज़ से ज़बान पर चढ़ जाती है गाली। उसका नुक़सान भी बहुत हो जाता है कि जिह्वा में शक्ति नष्ट हो जाती है। जिह्वा का आदर नहीं होने से, आप जो बोलते हैं, वह झूठ होगा। जो आदमी मुंह से गाली नहीं देता उसकी जिह्वा में शक्ति होती है। आपने बहुत बार देखा होगा कि भाषण करते करते अगर कुछ कहना भी होता है, तो मैं ठिठक जाती हूँ कि कहीं ऐसा न हो कि, जो बातें जैसे ईसा मसीह ने कही थी कि सूअर के आगे मोती नहीं डालना चाहिए। लेकिन अंग्रेज़ी

में 'सूअर' शब्द जो है एक गाली है और बहुत बुरी गाली है। और मराठी में नहीं है। तो भी थोड़ी-सी है, पर ज्यादा नहीं है। पर अंग्रेजी भाषा में बोलते वक्त मैं नहीं बोलती हूँ। हिन्दी में बोलते वक्त ठीक है, सूअर किसी को कह दो तो ज्यादा से ज्यादा तय होगा कि बेवकूफ़ है। लेकिन जिह्वा पर सूअर बहुत गन्दा शब्द होता है। इस तरह से जहाँ-जहाँ जिस तरह का व्यवहार होता है, उसकी मर्यादा रखते हुए आदमी को रहना चाहिए, नहीं तो जिह्वा की शक्ति, जो सरस्वती की शक्ति है, वो नष्ट हो जाती है। भाषण में भी वाचालता, जिसे बाचालता कहते हैं, तो वाचालता के साथ अश्लीलता तो बहुत बुरी चीज है। हम लोग सुबोध घराने के लोग हैं और सुबोध घराने के लोगों में एक तरह की सभ्यता, decency (शिष्टाचार) होनी चाहिए। और उस सभ्यता को लेकर के हम लोगों को गाली गलौज की बात नहीं करनी चाहिए। और इसलिए कहते हैं कि होली पर कुछ न कुछ गाली देनी ही चाहिए। अगर नहीं दी, तो आपने होली मनाई ही नहीं। और इस तरह से करके भङ्ग भी पीते हैं। अब बहुतों ने कहा कि 'एक दिन भङ्ग पीने में क्या हर्ज है, माँ ?' कोई हर्ज तो नहीं। ऐसा कोई हर्ज नहीं है लेकिन भङ्ग पीने से पागल तो नहीं हो जाता। अगर आप हमें भङ्ग पीने को कहें तो हम तो भङ्ग नहीं पीयेंगे। क्योंकि वजह यह है कि हम तो पहले ही पीये हुए हैं, हमें कोई जरूरत नहीं पीने की। और लोग इसलिए पीते हैं क्योंकि वे सोचते हैं कि जो serious (गम्भीर) लोग हैं वे ज़रा-से हल्के हो जाएँ, जैसे कि ego-oriented (अहंकारी) लोग हैं, वे भंग पी लें, थोड़ी-सी left-side को movement (इड़ा नाड़ी की तरफ़ झुकाव) हो जाती है, तो जरा-से हिल जाते हैं, भंग में बकना शुरू कर देते हैं। लेकिन भंग का प्रकोप ऐसा होता है कि जब हम ससुराल में गए, तो हमें क्या पता था कि भंग वंग पीते हैं। हमारे महाराष्ट्र में यह सब तरीक़ा नहीं है। महाराष्ट्र औरतों में तो वहाँ भंग का नाम ही नहीं सुना होता, उनको अच्छा ही नहीं लगता ये सब चीज़। तो घर गए, तो हमें क्या पता था कि सब भंग पीये बैठे हैं। उन्होंने कहा कि खाना खाइये, तो हमने कहा, चलो ठीक है। खाने बैठे, तो इतनी बड़ी थाली में-कायस्थों में जैसा तरीक़ा होता है-बड़ी थाली में, बैठकर लाये। और मैं तो कितना खाती हूँ, आप जानते ही हैं। चलो, उस दिन त्यौहार का दिन था तो ज्यादा खा लें। और वो खाती ही चली गईं, खाती ही चली गईं खाती ही चली गईं। हमने कहा कि भई क्या हो गया कुछ समझ में नहीं आया। और सब हँसते जाएँ और वे खाती ही जायें। हमारी जेठानी जी विधवा थीं और विधवा लोग भी भंग नहीं पीते, विधवाओं के लिए सब मना है। तो हमने कहा, "यह क्या हो गया जीजी ?" तो वे सब हँसते जाएँ। वे खाती जायें, और सब हँसते जाएँ। हमें कुछ समझ में नहीं आया कि यह क्या हो रहा है। बाद में हमें उन्होंने बताया कि ये सब लोग भंग पीये हुए हैं। तो मैं उठी थाली पर से, नमस्कार करके और हाथ धोया और अपनी अटैची उठाकर मैं चली मायके। किसी के पैर भी नहीं छुए हमारे यहाँ पैर छूने का रिवाज है। सबने कहा कि कहाँ गई ? लखनऊ में उन्होंने खबर भेजी कि भई कहाँ चली गई दुल्हन ? तो हमने कहा कि सब लोग भंग पीये हुये थे, इन लोगों से क्या बात हम करते? हम चले आए, हमने कहा कि सबको भंग ही पीने दो। तो बात यह है कि भंग वंग पीने की सहज योगियों को कोई जरूरत नहीं। जब चाहे तब मन में ही भंग पी ली। भंग का जो उपयोग है, left-side (वाम पार्श्व) में जाने का वह हम लोग ऐसे ही करते हैं। मतलब यह है कि अगर कोई आदमी बड़ा ही ego oriented (अहङ्कारी) है, बहुत dry है, बड़ा शुष्क है, गम्भीर है, तो उसके लिए सहज-योग में पूर्ण व्यवस्था है कि वह अपने आज्ञा चक्र को ठीक कर ले। आज्ञा चक्र को अगर वह किसी तरह से खुलवा ले, अपने ही आज्ञा चक्र को ठीक करले तो वह left-side में जा सकता है। निद्रा

के समय अगर आप आज्ञाचक्र को घुमाकर सो जाएँ तो अच्छी निद्रा आती है। और अगर उसको फिर भंग की दशा से निकलना है, तो फिर आज्ञाचक्र को कस लें, right side (दायीं ओर) में। तो जब अपने ही हाथ में सारी चीज पड़ी हुई है, जब हमारी सारी ही शक्ति हमारे अन्दर समाई हुई है और जब इस का पूरा ही ज्ञान हमको मालूम है कि कौनसा स्विच किस वक्त घुमाना है को उन बाहर की चीजों का अवलम्बन करने की जरूरत नहीं है। उस समय में भङ्ग शायद, यह चीज justified (न्यायसगत) थी, शायद कृष्ण के जमाने में। शायद कृष्ण नहीं पीते थे-खाते हैं शायद-पता नहीं क्या करते हैं। तो उन्होंने नहीं किया लेकिन बाक़ी लोगों को जरूरत पड़ी क्योंकि जो serious (गम्भीर) लोग थे, वे भंग पी लें क्योंकि misidentifications (भ्रम) हैं "हम महाराजा हैं, हम महारानी हैं, हम घर के मालिक हैं, हम फ़लाँ हैं, हम कैसे महतर से मिलें", भई महतर तो घर में झाड़ लगाते है। तो उसके लिए यह कि पहले तुम भंग पियो जिससे मेहतर और तुम एक हो जाओ। भूल जाओ कि तुम ब्राह्मण हो और वह मेहतर है। इसीलिए भंग पिला देते थे कि तुम्हें कुछ होश ही न रहे, जो misidentifications बने हुए हैं कि हम फ़लाँ हैं, हम ढिकाने हैं—भंग पीलिए, तो सब एक हो गए। अब इसी का ऊँचा हिस्सा ऐसा है, जैसे कबीरदास जी ने कहा कि सुरति जब चढ़ती है, तो सब एक हो जाते हैं। तो उन्होंने सोचा कि जब तम्बाकू आदमी खाता है, तो वह भी एक जात हो जाता है। तो तम्बाकू का नाम सुरति रख दिया। जब हिसाब नहीं लगा पाये तो सोचा कि तम्बाकू ही सुरति होगी। तम्बाकू जब खाते हैं, तो जिसकी तम्बाकू की तलब होती है तो चाहे वह राजा हो, तो उस वक्त सामने अगर ग़रीब भी बैठा हो, तो उसके सामने "तम्बाकू मेरे को भी दो।" माँगने लगता है तो उन्होंने कहा तम्बाकू सुरति हो सकता है क्योंकि इसमें राजा व रङ्क एक हो जाते है। यह इन्सान की खासियत है कि किसको कहाँ जाकर मिलाएगा, वह ही जाने। लेकिन होली की जो विशेषता है, उसमें यही याद रखना चाहिए कि दीवाली अगर इसे बनानी है, तो decency (अश्लीलता) के साथ indecency नहीं, अश्लीलता बिल्कुल नहीं आनी चाहिए। अश्लीलता अगर आई तो वह फिर होली नहीं। श्री कृष्ण की नहीं, वह तो होली हुई ऐसे लोगों की जो 'पार' नहीं हैं। जब 'पार' हो जाते हैं तो होली खेलते वक्त कोई भी अश्लीलता नहीं होनी चाहिए। यानी ऐसे, जैसे सहजयोग में स्त्री पुरुष होली नहीं खेलते। पुरुष, पुरुषों के साथ और औरतें औरतों के साथ। सहज योग में, भाभी, देवर में हो सकती है। उसका भी एक नियम है, आप जानते हैं कि जो औरतें बड़ी हैं, वे अपने से छोटों के साथ होली खेल सकती हैं। और अगर पुरुष बड़े हों और स्त्री छोटी हो, तो किसी भी तरह का व्यवहार पर्दा होता है। उससे उलट, अगर स्त्री बड़ी हो, तो उसके साथ में पुरुष का व्यवहार खुला होता है, जैसे अपने यहाँ भाभो होती है। इसीलिए भाभी, देवर में होली होती है, लेकिन जेठ और दुल्हन में नहीं होती। जेठ से पर्दा होता है। और यह क़ायदा आपको आश्चर्य होगा कि सारे हिन्दुस्तान में है। और वह अपने आप ही चलता है, हम लोगों के अन्तरहित है, अन्दर से ही हमारे संस्कारों में बैठा होता है, क्योंकि हमारे यहाँ उल्टा काम नहीं है, अधिकतर। कि जैसे इंग्लैण्ड में आप देखेंगे कि अस्सी साल की बुढ़िया है, अठारह साल के लड़के से शादी करेगी। अपने यहाँ तो कोई सोच भी नहीं सकता ऐसा। मानें, इनमें अपनी बुद्धि ही नहीं है। ये कहते हैं कि इधर यह तो सब चीजें होती ही हैं। हमारे संस्कारों को वजह से, जो हमारे अन्दर बैठे हुए हैं, उनकी वजह से हम बचे हुए हैं। भई, अस्सी साल की कोई भी स्त्री हो, वह तो माँ हो ही गई; उसे तो माँ मानना ही होगा। माँ क्या हुई, नानी हो गई। तो यहाँ किसी भी बेवक़ूफ़ के भी दिमाग़ में ऐसी बात नहीं आती। कितने भी पतित आदमी के दिमाग़ में भी

ऐसी बात नहीं आती और किसी भी बुढ़िया औरत के भी दिमाग़ में कभी ऐसी बात आयेगी नहीं ? तो हमारे जो संस्कार हैं, भारतीय संस्कार हैं, इन्हीं की वजह से हम लोग धीरे-धीरे पूरी तरह से परिपक्वता पा गए हैं। वे लोग परिपक्व नहीं हैं। उनकी उम्र हमेशा गवेपचीसी में ही गुज़र जाती है, उससे ऊपर नहीं उठ पाये। हम लोग परिपक्व हो जाते हैं, क्योंकि हमारे अन्दर के संस्कार वे ऐसे हैं कि जो माने जाते हैं पूरी तरह से। जैसे एक पेड़ जो अगर क़ायदे से बढ़े, तो परिपक्व हो जायेगा और अगर हवा में ही लटके, तो परिपक्व नहीं हो सकता। वे बुड्ढे भी अगर होते जाते हैं, तो भी उनमें बचकानापन जाता ही नहीं। और जो हिन्दुस्तानियों का सम्बन्ध भी western(पाश्चात्य) लोगों से हो जाता है, वे भी वैसे ही हो जाते हैं, बुढ़ा जाते हैं। बड़ी-बड़ी लड़कियाँ होंगी उनको, वे भी बड़ी बेवक़ूफ़ी की बातें करेंगी जो कि लड़कियाँ वहाँ करती हैं। उनकी भी समझ में, सूझबूझ में परिपक्वता नहीं है और इस परिपक्वता को पाने के लिए मनुष्य को चाहिए कि वे जो क़ायदे-क़ानून बने हुए हैं, उन पर चलाए और उसमें बहुत ही आनन्द होता है। कोई गड़बड़ नहीं हो सकती कुछ दोष नहीं आ सकता।

तो, होली का जो यह हिस्सा है, इसको सहज योग में छोड़ देना पड़ेगा, अश्लीलता का। और होली का जो प्रेम का हिस्सा है, उसे अपनाना है। बग़ैर भङ्ग पीये हुए ही, हम सब एक हैं यह भावना आनी चाहिए। इस वक्त विशेष रूप से गले मिलना चाहिए क्योंकि कृष्ण का सारा कार्य प्रेम का है। प्रेम को पूरी तरह से लूटने की कोशिश करनी चाहिए क्योंकि उन्होंने कहा है कि यह सब परमात्मा के प्रेम की लीला है इसमें seriousness(गम्भीरता) नहीं है, लीला। लीलाधर जिसने लीला को धारण किया वह श्री कृष्ण थे और इसीलिए उन्होंने कहा कि सब चीज़ को लीलास्वरूप 'लीलाधर'। और यह लीलाधर की जो लीला है, उसमें अश्लीलता कहीं नहीं है। और हमारी जो संस्कृति है, सीधी सरल बहती हुई है, इन लोगों की उल्टी खोपड़ी है। जैसे, औरतें जो हैं, वे बदन खोलकर घूमेंगी और मर्द अगर हो और एक आध औरत अगर आ जाए, तो फौरन कोट के बटन लगाएगा। हमने कहा, कि मर्दों को कोट के बटन की क्या जरूरत है, औरतों को ही क़ायदे से पल्ला लेना चाहिए। पर इनकी सभी संस्कृति उल्टी सुल्टी बैठी हुई है। और वह बैठ ही गई है। जमेगी अब धीरे-धीरे सहजयोग में आने के बाद जम रही है। और अब जो आप लोगों की संस्कृति है, उसको आप लोग कृपया न छोड़ें। सहजयोग के लिए बहुत महान् चीज है कि आप हिन्दुस्तानी भी हैं और आप के पास संस्कृति की बड़ी भारी धरोहर है, उसको आप रखें पकड़ कर। उसी चीज पर जमें और उसी पर आप परिपक्वता पायें। लेकिन इसका बिल्कुल मतलब यह नहीं कि आप बुड्ढाचारी हो जाएँ। या किसी भी तरह आपमें seriousness (गम्भीरता)आ जाए। प्रसन्नचित्त। आपकी माँ जब हँसती है, तो आपने देखा है कि कभी-कभी तो सात मञ्जिल की हँसी आती है। सब लोग हैरान होते हैं कि गुरु लोग तो कभी मुस्कुराते ही नहीं और माँ तो हँसती रहती है, और उनके मुँह से मुस्कराहट तो कभी जाती ही नहीं है। मैं तो एक मिनट से ज़्यादा serious (गम्भीर) कभी हो ही नहीं सकती हूं। जब serious भी होती हूँ तो भी नाटक ही रहता है। और बहुत-से लोग इस बात को जानते हैं, इसलिए वे भी नहीं seriously(गम्भीरतापूर्वक) लेते—यह ग़लत बात है ! तो कृष्ण ने यह चाहा कि जो कुछ भी ग़लत-सलत हो गया है—राम के जीवन की वजह से। राम का जीवन बहुत आदर्श, ऊँचा और गम्भीर ! तो उन्होंने कहा कि ये सब लोग राम बनने जा रहे हैं, तो उन्होंने कहा कि एक बात सुनो राम का काम तो राम करके चले गए, अब तो लीला का समय है। लीलामय बनना चाहिए और इसीलिए उन्होंने सारे संसार को लीला का ही पाठ पढ़ाया। लीला का मतलब कभी भी अश्लीलता या अपनी मर्यादाओं से गिरना, अपनी परम्पराओं से

उतरना या अपनी जो प्राचीन धारणायें बहुत सुन्दर अभी तक बनी हुई हैं, उनको छोड़ना, ये नहीं है। हाँ, रूढ़ि आदि जो गन्दी चीजें हैं उन्हें छोड़ देना चाहिए। लेकिन जो पवित्रता की भावनाएँ, आपस में रिश्तेदारी की हैं, उसमें पूरी तरह से सहजयोग में हम लोग हैं और उसमें आगे बढ़ना चाहिए। भाई-बहन के रिश्ते—अब कल हमारे भाई साहब आये थे, बस देखा उन्होंने कि हमारी बहन—उनकी आँखों से आँसू ही बहे जा रहे थे। मैं देख रही थी कि वे बार-बार आँसू पौंछ रहे थे। वो कुछ और नहीं सोच सकते। सो यह जो पवित्रता की भावना है, प्रेम की भावना है, इसमें आदमी को चाहिए कि सहजयोग की दृष्टि से विचार करे। सहजयोग की दृष्टि से जो शोभायमान है। कोई-सा भी behaviour (व्यवहार) हो, जो अशोभनीय है, छोटी-छोटी बातों पर बात करना, छोटी-छोटी बातों में उलझना, बेकार में आपस में झगड़े करना किसी भी चीज की माँग करते रहना, कि यह चाहिए, वह चाहिए या कोई भी इस तरह की बात करना, ओछापन है, ओछापन है ! और ऐसे लोग सहजयोग में नहीं जम सकते। एक बड़प्पन लेकर के, उदारता लेकर के अपने को चलाना चाहिए। सो आज की असल में जो पूजा है, वह बस थोड़ी-सी पूजा करनी है, वाइब्रेशन्स इतने हैं कि कोई पूजा की आवश्यकता नहीं है, मन्त्र भी कहने की आवश्यकता नहीं है। मन्त्र भी गाम्भीर्य में डाल देते हैं, पता नहीं क्यों। तो आज प्रसन्नचित्त होकर के, बस दो ही तीन मन्त्रों में हम आज की पूजा सम्पन्न करें। लेकिन इतना मैं कहूंगी कि होली को दिवाली बनाना है और दिवाली को होली। तब सहजयोग का integration (एकीकरण) होगा। दिवाली भी प्रसन्नचित्त होकर मनाएँ और दिवाली में भी लोग इतना रुपया खर्च करते हैं कि दिवाली के बाद दिवालिया होकर के, यानी इसी से शब्द 'दिवालिया' निकला है। क्या आप यह मान सकते हैं कि दिवाली से शब्द 'दिवालिया' निकला है? जिसने दिवाली मना ली वह दिवालिया हो गया। नहीं तो 'दिवालिया' शब्द कैसे निकला, यह ही बताइये ? कुछ बड़े सुन्दर शब्द हैं, उनमें एक 'दिवालिया' शब्द है। दिवाली मनाई आपने ? अब आप दिवालिया हो जाइये। तो हम लोगों को दिवालिया नहीं होना है। कोई ऐसी चीज नहीं करनी चाहिए जो कि मर्यादा से बाहर हो—दिवालिया नहीं होना। जितना अपने बूते का है उतना करिये उससे आगे परमात्मा पर छोड़िये। दिवालियापन करने की जरूरत नहीं और होली में दीवानगी करने की जरूरत नहीं। कोई-सा भी कार्य ऐसा नहीं करना चाहिए जो indecent (गन्दा) हो, जिसमें सभ्यता में गुरूरता हो। सभ्य तरीके से काम करना है। छोटी-छोटी चीजें आपके अन्दर आ जाती हैं। उस की मर्यादा, जैसे कल आर्टिस्ट लोग बजा रहें थे, उस वक्त किसी को उठना नहीं चाहिए, किसी art (कला) का मान करना चाहिए। आपने बहुत बार देखा होगा कि जब कोई artist (कलाकार)बजाता है, तो मैं खुद जमीन पर बैठती हूँ, क्योंकि आप भी सीखें। मान-पान किसका करना चाहिए, यह सहज योगियों को बहुत आना चाहिए क्योंकि protocol (आचार) की बात है। Artist (कलाकार) लोग भी, देखिये पैर पर हमेशा–ये tradition(परम्परा) है—पैर पर हमेशा शॉल रख करके बजाएंगे, अगर असली आर्टिस्ट होंगे। क्योंकि हो सकता है कि श्रोतागण में कोई बैठे हों देवदेवता और मेरे पैर न दिखाई दें। अपने देश की इतनी बारीक-बारीक चीजें हैं कि मैं आपको क्या बताऊँ ? इतना सुन्दर अपने देश में बना हुआ है। इतना सुन्दर परमात्मा का, कहना चाहिए कि अद्भुवस्त्र है, कि इतनी गहनता है उसकी बनावट में, इतनी काव्य मय में है सारी चीज, बहुत ही सुन्दर। काव्य मय ! लेकिन हम लोग उसे नहीं समझ पाते और उसे अपने जीवन में नहीं ला पाते, तो सब से गलती हो जाती है। मान पान, अब कल जेठ बैठे हुए थे हमारे

रिश्ते के, तो आप देखिए पूरे समय, पूरे लैक्चर में, वह एक मर्यादा बनी रही कि हमारे जेठ, बड़े भाई बैठे हुए हैं, उनके आगे कहाँ तक पहुँचना चाहिए। अब तो हम आदि शक्ति हैं, हमारे लिए कौन जेठ और हमारे लिए कौन बड़े भाई ? लेकिन जब इस रिश्ते में बैठे हुए हैं, तो उसका मानपान रखना है। हर रिश्ते का मान-पान रखना है। आप कुछ भी हो जाओ, सहजयोगी भी हो गए, तो भी आपको मान-पान रखना चाहिए। यह नहीं कि आप उसको तोड़ दें। और इस तरह से जब आप करेंगे, तो धीरे-धीरे आपकी समझ में आ जाएगा कि बड़ा ही आनन्द है इसमें। और यह बहुत ही मीठी चीज है। तो आज के होली के दिन सिर्फ़ होलिका-दहन का एक मन्त्र कहना है—'होलिका मर्दिनी'—इस मन्त्र से ही आप लोग मेरे पैर धोयें। और बच्चों को गणेश की स्तुति तो होनी ही चाहिए। तो गणेश की स्तुति करके बच्चे मेरे पैर धो लें और फिर तीन मन्त्रों से मेरे पैर धो लें और कोई खास चीज करने की जरूरत नहीं है। क्योंकि फिर वह seriousness आ जाती है। क्योंकि कृष्ण ने सब पूजाएँ बन्द कराके सिर्फ़ होली को ही कहा। छोड़ो, पूजा बन्द करो। Complete (पूरी) पूजा बन्द कर दी। उसी तरह आप लोगों को कृष्ण को याद करते हुए आज सब पूजायें बन्द कर देनी चाहियें। और सिर्फ़ यही करना चाहिए कि आज उल्लास और आह्लाद का दिन है, और सब होली खेलो। क्योंकि आज होली आई है, और होली का ही आनन्द उठाना है। और इसकी दिवाली बनाने का मतलब है कि जो मैंने बताया जो सुचारु रूप से सभ्यता को लेते हुए, अत्यन्त कल्याणपूर्ण ऐसी सुन्दर रचना नई तरह की हमको करना है। इसीलिए होली को दिवाली बनाना है और दिवाली को होली बनाना है। आप सबको मेरा अनन्त आशीर्वाद !

: प्रार्थना :

राम की तू सीता
कृष्ण की तू राधा
सब दुःख दूर करो
ओ मेरी निर्मल माँ ॥

छवि तेरी मनभावन
गङ्गा-सी तू पावन
प्यासों की सावन
ओ मेरी निर्मल माँ ॥

सागर से गहरा
आकाश से ऊँचा
सुखमय प्यार तेरा
ओ मेरी निर्मल माँ ॥

ये झरने मदमाते
गगन के ये तारे
सब तेरे गुण गाएँ
ओ मेरी निर्मल माँ ॥

With best compliments from :

REGAL ASBESTOS INDUSTRIES PVT. LTD.

85/2, BEHIND S. T. WORK SHOP
P. O. KRISHNA NAGAR
AHMEDABAD-382 346

श्री यीशु का सन्देश एवं योग में स्थायित्व के विघ्न-बाधाएँ

कैक्सटन हॉल, लन्दन
१० दिसम्बर १९७९

आज का शुभ दिन हमारे लिये स्मरणीय है। महान् ईसामसीह आज ही के दिन भौतिक शरीर धारण कर भूतल पर अवतरित हुये थे। उन्होंने जन्म धारण किया और उनका कार्य मानव चेतना को प्रकाशमय बनाने का महान् उद्देश्य पूर्ण था, जिससे वे मानव प्राणी की चेतना के अन्दर ही वास्तवीकरण को देख पा सकें कि वे भौतिक शरीर नहीं हैं परन्तु वे आत्मा हैं। प्रभू ईसा का सन्देश उनका पुनर्जीवन था अर्थात् आप अपनी आत्मा हैं, भौतिक शरीर नहीं और उन्होंने दिग्दर्शन कराया कि उनके पुनर्जीवन से आत्मा के राज्य में उत्थान किया जो कि वे थे, क्योंकि वे 'प्रणव' थे, वे ब्रह्म थे, महा विष्णु थे। जैसा कि मैंने आपको बताया है उनके जन्म के सम्बन्ध में कि वे इस भूतल पर मानव जीवात्मा की तरह आये। वे एक दूसरी ही वस्तु दिखाना चाहते थे कि आत्मा का धन सम्पत्ति से कोई सम्बन्ध नहीं है। और न ही शक्ति से भी कुछ लेना है। सर्वाधिक शक्तिशाली है और सर्वव्यापी है। परन्तु वे एक घुड़साल(अस्तबल) में पैदा हुये थे, किसी राजा के यहाँ अथवा राज प्रासाद में नहीं। वे एक बढ़ई के साधारण परिवार में पैदा हुये थे। यदि आप राजघराने में जन्मे होते तो आप 'बादशाह' कहलाते और आप से बढ़कर कोई नहीं होता। क्या यह सही नहीं है ? इसका अर्थ यह हुआ कि आपसे उच्चतर कोई भी नहीं और न ही कोई वस्तु आपको सुसज्जित कर सकती है। आप जो भी कुछ हैं उच्चतम श्रेष्ठ हैं। समस्त भौतिक पदार्थ तृणवत हैं। अतः उनको सूखी घास के तिनकों में रखा गया है। बहुतों को यह बुरा लगता है और वे पश्चाताप करते हैं कि प्रभू ईसामसीह जो हमारी रक्षा करने हेतु आये थे वे ऐसी दशा में रखे गये हैं और ईश्वर ने उन्हें इससे श्रेष्ठतर दशायें क्यों नहीं प्रदान कीं। परन्तु ऐसे लोगों के लिये यह कोई बड़ी बात नहीं है कि आप सूखी घास में पड़े हैं, या अस्तबल में, अथवा राज प्रासाद में। प्रत्येक वस्तु वैसी ही है। क्योंकि यह उनको स्पर्श नहीं कर पाती है। वे उस प्रकार से पृथक हैं। वे पूर्णतया पूर्णानन्द में निमग्न हैं वे अपने आपके स्वामि हैं अन्य कोई उन पर प्रभुत्व नहीं जमा सकता। कोई वस्तु उन पर प्रभुत्व नहीं जमा सकती। कोई सुख सुविधा उन पर हावी नहीं हो सकती। वे अपने आप में सुख सुविधाओं के स्वामी हैं और अपने आप में ही सम्पूर्ण सुख सुविधाएँ उपलब्ध की हुई हैं। वे सन्तुष्ट पुरुष हैं। यही कारण है कि वे बादशाह हैं। वे बादशाह कहे जाते हैं, ऐसे बादशाह नहीं जो भोग पदार्थों के पीछे भागते हैं जो अपनी इच्छाओं के क्रीतदास हैं। मेरा मन्तव्य है कि यदि आप सुखी हैं तो बहुत श्रेष्ठ हैं। यदि आपके पास नहीं है तो भी श्रेष्ठ हैं इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता है।

लेटिन अमरीका में जब मैं वहाँ गई तो बहुत-से लोगों ने मुझसे पूछा कि हमारी समझ में नहीं आता कि प्रभु ईसा एक निर्धन परिवार में क्यों पैदा हुये। यह पुनः ईश्वर के सम्बन्ध में मानव की धारणा है आप देखते हैं, वह ईश्वर पर शासन करना चाहता है, "एक बादशाह के महल में पैदा होने से': आप उसे आज्ञा नहीं दे सकते। हमारी ईश्वर के प्रति अपनी धारणा अलग ही है कि वे क्यों एक निर्धन पुरुष हुए थे। क्यों वे असहाय हुये। वे सब राजाओं

और समस्त राजनीतिज्ञों को एक साथ मिलाने के पश्चात् भी वे उन सबसे अधिक त्वरित शक्तिमान थे। वे किसी से भी भय नहीं मानते थे। जो कुछ भी वे कहना चाहते थे वे निःसंकोच कहते थे। वे शूली पर लटकाये जाने से भी भयभीत नहीं हुये, अन्य किसी ऐसी सजा से भी नहीं घबराये, विचलित नहीं हुए। यह वस्तु आप केवल मानव जीवात्माओं में ही देख पाते हैं जो ऐसे मिथ्या विचार रखते हैं जीवन के सम्बन्ध में और यही कारण है कि वे इन विचारों को परमात्मा पर भी लागू करना चाहते हैं अथवा उन पर भी घटित करना चाहते हैं। और वे यह भी चाहते हैं कि वे इन धारणाओं का अनुसरण करें। ईश्वर आपकी धारणा नहीं हैं। वह एक धारणा (concept) है ही नहीं। आप भी यही कहते हैं कि अन्ततः धारणा धारणा ही होती है। वास्तविकता नहीं है। यह तथ्य मैंने अभी हाल ही में खोज निकाला है। यह एक और कल्पना है कि धारणा एकमात्र धारणा है। बहुत अच्छा, माताजी कहती हैं यह अच्छा है, तब क्या ? परन्तु फिर भी यह धारणा है क्योंकि धारणा एक विचार है।

आपको विचार के स्तर से ऊँचा उठना है और निर्विचार की चेतना में पहुँचना है जहां आप विचार में नहीं हैं परन्तु आप विचार के केन्द्र में हैं इस आशय में कि एक विचार उभरता है और गिरता है और इन दो विचारों के मध्य में (जो विचार उठते और गिरते हैं) एक स्थान है। जब आप इन विचारों के केन्द्र में स्थित होते हैं उसे 'विलम्ब' के नाम से पुकारा जाता है। वह समय जब हम सोचते हैं उस दशा में आप क्राइस्ट को समझ सकेंगे।

वह आंशिक रूप से, वास्तव में, यहाँ थे हमारी रक्षा हेतु, क्योंकि उनके अनेक आकार हैं। अर्थात् वे अनेक रूप रूपाय हैं। हमें कहना है कि वे न केवल मानव जीवधारियों की रक्षा हेतु आये थे वरन् उनके और भी कई एक आकार थे। मानव जीवधारियों ने माँग की कि उनकी रक्षा हो। क्यों? वे सबके सब क्यों बचाये जायें ? उन्होंने ईश्वर के लिये क्या किया ? हम कैसे ईश्वर से माँग कर सकते हैं कि वह हमारी रक्षा करें ? क्या आप कर सकते हैं ? आप इसकी मांग नहीं कर सकते हैं।

जैसा कि आप यहाँ देखते हैं, वे सत्य सनातन विराट् में, विशुद्धि और सहस्रार के मध्य में मार्ग की रचना करने पधारे थे। वे वहाँ द्वार खोलने के लिये पैदा हुए। उत्क्रान्ति में प्रत्येक अवतार इस धरा पर अवतरित हुए हमारे अन्दर एक द्वार खोलने के लिये अथवा हमारी चेतना में उजियारा (प्रकाश)करने के लिए। अतः सिद्ध हुआ कि प्रभू ईसा यह छोटा-सा द्वार खोलने के लिये पधारे जो हमारी ईगो(अहं) और सुपर ईगो(प्रति अहं) द्वारा रुकावटें डाल रही थीं। ईगो और सुपर ईगो हमारी विचार-धारा के दो स्रोत हैं। एक विचार वे हैं जो भूतकाल से सम्बन्ध रखते हैं। दूसरे वे हैं जो भविष्यकाल से सम्बन्धित हैं। वे उस रिक्त की पूर्ति अर्थात् खाई पाटने के लिये पधारे। और इसी प्रकार से उन्होंने अपना बलिदान किया (अपना और अपने भौतिक शरीर का)। आपके लिये यह एक अत्यन्त विशाल पश्चाताप और विलाप का अवसर है। परन्तु ऐसे पुरुषों के लिए यह कुछ भी महत्त्व नहीं रखता है। यह तो एक लीला मात्र है जो उन्हें करनी पड़ती है। यही कारण मेरी समझ में नहीं आता है कि आप उनको ऐसा दुखित, अभागा जीव क्यों प्रदर्शित करते हैं। वे कभी भी अभागे नहीं थे। ऐसे पुरुष कभी भी दयनीय एवं निरीह नहीं हो सकते जैसे कि आप हैं। यह एक दूसरा ही रूप है कि उन्हें लम्बा, अस्थि चर्मावशिष्ट, जिसकी अस्थियाँ एक-एक कर गिनी जा सकें, कितना भयंकर प्रदर्शन किया जाता है। मैं आपको बताती हूँ कि वे ऐसे नहीं थे जैसा आप उन्हें प्रदर्शित करते हैं।

वे बाल्यावस्था से लेकर अपनी मृत्युपर्यन्त एक विनोदी एवं आनन्दित प्रकृति के पुरुष थे। वे स्वयं आनन्द थे, वे हर्षित थे और आपको प्रफुल्लित करने आये थे। प्रफुल्लता के उजियारे से आपके आनन्द के उद्गम को प्रकाशमय करने आये थे। आपके हृदय में स्थित आपकी आत्मा को जागृति प्रदान कर प्रसन्नता से भरपूर बनाने आये थे। वे केवल आपकी रक्षा हेतु ही इस भूतल पर अवतरित नहीं हुये थे, वे आपको प्रफुल्लित एवं प्रसन्नचित्त बनाने आये थे क्योंकि मानव प्राणी अपनी अज्ञानता के कारण, महामूर्खता का व्यवहार कर, परस्पर मारपीट कर, विनाश करने में तत्पर थे।

किसी ने भी आपको मदिरालयों में जाने को प्रेरित नहीं किया और न ही ख़्वामख्वाह की मुसीबत मोल लेने को कहा। किसी ने भी आपको रेस खेलने को नहीं कहा और न दिवालिये बन जाने को कहा। किसी ने भी आपको प्रेरणा नहीं दी कि आप भयानक गुरुओं के पास जायें और अपने आप को विपत्तियों में फँसायें। परन्तु आप स्वयं ही स्वेच्छा से अपना विनाश करने पर तुले हैं। वे आप के पास प्रातःकालीन पुष्प की तरह आपको प्रसन्न-चित्त बनाने आये थे। प्रथम तो वे आपको प्रसन्न करने, फिर आनन्दित करने आये थे। क्या आप कोई ऐसा बालक देखते हैं? अन्तिम रूप से मैं अपने आपको जानती हूँ। यहाँ के अद्भुत मानव जीवों के सम्बन्ध में नहीं जानती हूँ। उनको फूल भी काँटे के सदृश्य दिखाई पड़ते हैं। मेरा आशय है कि मैं नहीं जानती हूँ कि वे कैसे प्रबन्ध करते हैं। आप कहीं भी कोई बच्चा देखते हैं वह कितनी आह्लाद-कारी वस्तु है।

यह उस दिव्य का बालक है जो इस भूमि पर बालक रूप में आया था और अत्यन्त आह्लादकारी था। यही कारण है कि क्रिसमस हम सबके लिये, समस्त विश्व के लिये आनन्द एवं उल्लासप्रद है। यह एक परम आह्लाददायक त्यौहार होना चाहिये। वह हमारे लिये प्रकाश लाया जिसके उजाले में हम ईश्वर नाम से पुकारी जाने वाली वस्तु को भली भाँति देख समझ पा सकें। ऐसा भी कोई है जो इस अज्ञानता के अन्धकार को मिटाने में समर्थ हो। यह प्रथम शुभारम्भ है। अतः हमारे लिये यह उल्लास-मय आनन्द आवश्यकोय है। सहज, जिसे हम सहजता से पाते हैं। किसी वस्तु को भी गम्भीरता से नहीं लेना चाहिये जिसके हम आदी (अभ्यस्त) हैं। हम नहीं लेते हैं क्योंकि यह एक लीला मात्र है। यह माया है। मैंने इनको समस्त त्यौहारों, धार्मिक उत्सवों में देखा है. कि जन समुदाय, विशिष्टतया वृति के पुरुष इसका अनुसरण करते हैं। तथाकथित धार्मिक पुरुष ही अत्यधिक गम्भीर होते देखे गये हैं। एक धार्मिक व्यक्ति हँसी के फ़व्वारे (बुलबुले) छोड़ता है। वह नहीं जानता कि अपने हर्षोल्लास को कैसे गुप्त रखें।वह यह भी नहीं जानता कि अपनी हँसी पर कैसे नियन्त्रण करे। जब वह किसी ऐसे व्यक्ति को अनावश्यक ही गम्भीर मुद्रा में देखता है। मेरा आशय है कोई भी व्यक्ति मरा नहीं है। जिस ढङ्ग से लोग कहते हैं कुछ-कुछ ठीक वे भी नहीं जानते हैं कि हमें अपने आप से क्या करना है। इस समस्त विश्व में कुछ भी ऐसा नहीं है एक व्यक्ति के लिये जो क्राइस्ट के समान महसूस करे और शोकातुर हो, यदि आप वास्तव में उसमें विश्वास धारण करते हैं। तब सर्वप्रथम आप कृपा करके यह शोका-कुलता और मुँह फुलाने की मूर्खता का परित्याग कीजिये, निठल्ले और चुपचाप का मौन धारण न कीजिये, एकान्तवासी न बनिये। नैराश्य न बनें।

यह क्राइस्ट को देखने का तरीक़ा नहीं है। देखिये वे कैसे जाते थे, और भीड़ को नियन्त्रित कर उन से बातचीत करते थे। अपने चारों ओर एकत्र हुये समस्त भक्तों के सामने अपना हृदय खोल दिया और उन्हें सुखी, प्रसन्न बनाने का प्रयत्न किया। उन्होंने कहा था कि आप फिर जन्म लेंगे अर्थात् उन्हें यह काम करना था और आपको भी कभी

इसे पाना था। उन्होंने वायदा किया था कि आप को वास्तव में जन्म लेना पड़ेगा। प्रभु ईसा हमारे ही अन्दर उत्पन्न होंगे। मुझे इसका ज्ञान नहीं है कि ईसाई मतावलम्बी इस कथन का क्या अर्थ निकालेंगे ? कैसे आपका पुनर्जन्म निश्चित् है। बप्तिस्म की विधि के माध्यम से नहीं। किसी के थियोलॉजिकल कॉलिज से बाहर आते ही वह आप को क्रिश्चियन नहीं बना देगा। जैसा हमारे देश भारत में होता है जहाँ वेतनभोगी ब्राह्मण नियुक्त होते हैं जैसे आपके यहां भी वैतनिक हैं। सारे दिन तो वे खाने-पीने, मौज-मस्ती में बितायेंगे और सायं काल में कुछ देर के लिये धार्मिक कथा, वार्ता, प्रवचन आदि करने पधारेंगे। आपको ऐसा पुरुष होना चाहिये जिसकी नियुक्ति ईश्वर द्वारा प्राधिकृत हो। जब तक कि आप ईश्वर द्वारा प्राधिकरण प्राप्त नहीं कर लेते तब तक आप आनन्दोल्लास प्रदान नहीं कर सकते। यही कारण है कि मैंने इन सब पुरुषों को देखा है। तथाकथित पण्डित समुदाय और पुरोहितगण इतने गम्भीर(serious) हैं क्योंकि वे ईश्वर द्वारा अधिकृत नहीं हैं। यहाँ तक कि क्रिसमस दिवस के अवसर पर यदि कोई ग्रामीण आता है तो उसे यह शवयात्रा जैसी प्रतीत होगा। समारोह के पश्चात् जब वह घर पहुँचेगा तो बतायेगा कि आप कैसे मनाते हैं ? शैम्पैन के साथ और तत्पश्चात् शव यात्रा में भाग, ऐसे वे मनाते हैं। मैं नहीं जानती पर वे शैम्पैन अवश्य लेते हैं।

आप लोग उसका अनादर तिरस्कार कर कैसे क्रिसमस मना सकते हैं ? वे आपकी चेतना को प्रकाशमय बनाने पधारे थे क्योंकि वे आपकी चेतना का सम्मान करते थे। उस बिन्दु तक जहां तक ये पहुँच पाई थी परन्तु आप हैं कि उसे बुझाना चाहते हैं—पतनोन्मुख करना चाहते हैं। क्या उसको समझने का यही मार्ग है ? और उन्होंने प्रण किया है कि वह आपको पुनर्जन्म (Baptised) देगा—आपको पुनः जन्म धारण करना पड़ेगा और अब सहजयोग में वह प्रण पूरा किया जा रहा है। अतः आप हर्षोल्लास मनाइये कि यहां आज्ञा चक्र पर आपके अन्तराल में प्रभु ईसा फिर उत्पन्न हुए हैं और वे वहाँ विराजमान हैं और आप जानते हैं कि उनसे सदैव सहायता की याचना कैसे कर सकते हैं। प्रधान वस्तु यह है जो भली भाँति समझ लेनी चाहिए कि समय आ पहुँचा है आपके हित के लिये, जो कुछ कि शास्त्रों, धर्मग्रन्थों में प्रतिज्ञा की गई है उसको हस्तगत करने के लिये। यह बात केवल बाइबिल में ही नहीं कही गई है वरन् संसार भर के धर्मग्रन्थों में वर्णित है। आज समय आ गया है कि आपको एक क्रिश्चयन, ब्राह्मण, पीर, केवल कुण्डलिनी जागरण के माध्यम से बनना है। अन्य कोई मार्ग नहीं है।

और अभी आपका अन्तिम निर्णय है, ईश्वर आपका कुण्डलिनी जागरण के माध्यम से निर्णय करने जा रहा है। वह अन्य किस प्रकार से आपका निर्णय करेगा ? आप स्वयं किसी के सम्बन्ध में सोच विचार करें और अब एक पुरुष आपके पास आता है। यहां कोई आपका निर्णय करने बैठा है। कैसे ? कितने केश कला विशारदों के पास आप जाकर केश सँवार चुके हैं ? क्रिसमस के लिये कितने सूट आपने सिलाये हैं ? कितने अनुपम उपहार आप लाये हैं और कितने कार्डस आपने भेजे हैं ? और कितने सारे आदमियों को आपने अन्य वस्तुएँ जो अधिक यथायोग्य उपयोगी नहीं है, प्रदान की हैं। यह कोई तरीक़ा नहीं है। अथवा आपने इनके लिये क्या मूल्य चुकाया है। ये वस्तुयें, ये तरीक़े, रीति-रिवाज जिनके लिए हम विशेषतया जागरूक हैं, पता नहीं किस विधि से हम ईश्वर द्वारा निर्णीत किये जाने हैं।

जनता का कथन है कि बनावटी रूप से नहीं, हमने क्या गहनता प्राप्त की ? हमें देखना है कि हमारी पैठ कितनी गहन है। अधिक से अधिक हम उस बिन्दु तक पहुँच पाते है जहाँ हम फिर एक

धारणा बन जाते हैं। सो जो भी कुछ गहनता हम प्राप्त करते हैं वह ज्ञान शक्ति विचार तक ही सीमित हैं—धारणा बिन्दु तक। उससे परे पहुँच नहीं पाते फिर कैसे हम निर्णीत (judge) किये जा सकते हैं? यदि आप लोग डाक्टर के पास जाते हैं तो कैसे जाँचे जाते हैं। वे अपने उपकरण रखते हैं, वह अपना कार्य आरम्भ करता है, प्रकाश करता है और स्वयं निरीक्षण कर बताता है कि यह स्थिति है। और किस प्रकार से आपकी अध्यात्मिकता को जाँचा जाता है? कैसे एक बीज का निर्णय (judge) किया जाता है। इसके प्रस्फुटित होने से। जब आप बीज को अंकुरित करते हैं और जब आप इसकी अंकुरण शक्ति को देखते हैं तभी आप जान सकते हैं कि बीज ठीक है अथवा नहीं। इसी भाँति से आप भी निर्णीत किये जायेंगे कि आप कितनी अंकुरण शक्ति रखते हैं। जिस तरीक़े से आपको सिद्धि (realisation) प्राप्त होती है, जिस प्रकार से आप इसको सम्भालते हैं और आदर सम्मान देते हैं। यह एक सही मार्ग है जिससे कि आप निर्णीत किये जायेंगे, न कि आपके वस्त्रालङ्कारों से जो आपने धारण किये हुये हैं। मैचिंग (matching) के ढंग से, आप जो कुछ करते हैं अथवा आपके केश कला विशारद ने आपको जैसा भी सुसज्जित किया है। न ही आपके पद से भी जिस पर आप स्थित हैं। चाहे आप कितने ही बड़े राजनीतिज्ञ अथवा विशिष्ट अधिकारी हो गये हैं। और न इससे कि आपने कैसे मकान आवास के लिये बनाये हैं। किस प्रकार के कितने नोबेल प्राइज़ आपने जीते हैं। और न ही आपने कितने परोपकार के कार्य किये हैं उन से भी नहीं। आपने कितना धन धर्मार्थ दान किया, उससे भी नहीं उससे आप यह सोचने लगते हैं कि आपने कितना सारा धन दान दिया है। यदि आपने वास्तव में अत्यधिक धन दान में दिया है तो आप का अहं अत्यधिक बढ़ जायेगा और आप कहीं न कहीं अटके रह जायेंगे और आप अपने स्तर से गिर जायेंगे।

यह एक निर्णय है जिसमें एक छोटा-सा पङ्ख भी एक जलपोत से भी अधिक तौला जाता है, भारी होता है। यह एक भिन्न प्रकार का, एक व्यक्तित्व का निर्णय है। हम देख सकते हैं कि मानव जीवधारियों ने कैसे प्रभु ईसा को जज किया और ईश्वर ने कैसे जज किया। वे पधारे और सूखी घास के तिनकों पर रहे, पङ्ख की तरह से। उनकी माताजी ने कभी बेआरामी का अनुभव नहीं किया। इसी प्रकार जिन्होंने अपने मृदु व्यवहार से दूसरों को नहीं सताया, न किसी को यातना दी उनको प्रथम कोटि के निर्णय में लिया जाना है।

कुण्डलिनी जागरण में भी परम्परागत दोष स्वभाव से ही प्राप्त हैं। कुण्डलिनी में भी कुछ दोष होते हैं जो आपके पूर्व जन्मों के सञ्चित कर्मों के कारण हैं। क्योंकि आप इस जीवन में जो कुछ भी कर्म करते रहे हैं, जिनको आपने वास्तविक मानकर किया है, वह केवल एक धारणा मात्र है। क्योंकि आपने उस वास्तव को नहीं जाना है। जो कुछ कि आप कर रहे हैं वह अज्ञानता के वशीभूत होगा। आपने जो कुछ भी अन्धकार में किया है उसमें अन्धकार का कुछ न कुछ अंश अवश्य वर्तमान रहेगा अतः सिद्धि के बिना यदि आपने यह प्रचार किया कि आप साधु-सन्त महात्मा हैं तो आप को वह अवसर सुलभ न हो सकेगा। यदि आप अपने सम्बन्ध में यह सोचते हैं कि आप एक दिव्य व्यक्तित्व रखते हैं और आप एक सिद्ध (realised) सन्त हैं, तो सम्भव नहीं। सब धर्मों के महन्त, मठाधीश सबसे अन्त में सिद्धि पायेंगे।

महर्षि वाल्मीकि ने एक अत्यन्त रोचक कथा का श्री रामायण में वर्णन किया है कि एक कुत्ते से पूछा गया कि अगले जन्म में आप क्या बनना चाहते हैं। तो उसने उत्तर दिया कि आप मुझे कुछ भी बना सकते हैं परन्तु मुझे मठाधीश न बनाना अथवा महन्त, पुजारी आदि न बनाना। आप चाहे मुझे कुछ भी बनायें पर मुझे कहीं का भी पुजारी न

बनायें। आप जरा कल्पना कीजिये एक कुत्ते में भी इतना विवेक है। परन्तु मेरे कहने का अभिप्राय यह बिल्कुल नहीं है कि सब ही ऐसे हैं। हो सकता है कि उनमें भी सच्चे खरे व्यक्ति भी मौजूद हो। उन में से कुछ वास्तव में सिद्धपुरुष हो सकते हैं जो ईश्वर द्वारा प्राधिकरण प्राप्त किये हुये हों। परन्तु मुझे विश्वास है कि वे जनता द्वारा स्वीकृत नहीं किये गये हैं। मुझे इस तथ्य का पूर्णतया विश्वास है। क्योंकि मैंने आपके इतिहास का निरीक्षण किया है और ये सब लोग परित्यक्त हैं और अनाचार से पीड़ित हैं।

परन्तु अब समय आ गया है सही और गलत, सत्य और असत्य का निर्णय लेने का। आप अब और अधिक अत्याचार (crucify) नहीं कर सकते। निश्चय से आप नहीं कर सकते। प्रत्येक का निर्णय कुण्डलिनी जागरण द्वारा निश्चित् किया जायेगा।

आपको विदित होना चाहिये कि मानव जीवात्माओं की तीन श्रेणियां हैं। मैं नहीं जानती किस ओर से आरम्भ करूँ जिससे आप शोकाकुल न हों। एक श्रेणी के तो वे पुरुष हैं जैसे कि हम और आप हैं। वे नर योनि के व्यक्ति कहे जाते हैं। दूसरी श्रेणी देव योनि है। इनमें जन्मजात सिद्ध पुरुष और भक्तजन आते हैं। और तीसरी श्रेणी को राक्षस कहा जाता है। उनको गण भी कहा जाता है। परन्तु हम कह सकते हैं कि मानव जीवात्माओं के अन्तर्गत राक्षस गणों की जाति भी आती है जिन के कर्म निन्दनीय हैं और वे दुष्ट प्रकृति के हैं। अतः हमारे में दुष्टजन भी हैं और श्रेष्ठ पुरुष भी हैं और इन दोनों के मध्यवर्ती भी हैं।

श्रेष्ठ पुरुषों की संख्या अधिक नहीं हैं। वे बहुत कम हैं और जन्मजात सिद्ध हैं। वे समस्याप्रधान नहीं हैं मेरे लिये। परन्तु केन्द्र में स्थित पुरुषों के साथ आचार व्यवहार करना है। वे अच्छाई की ओर ही देखते हैं परन्तु उनके साथ एक ऐसी वस्तु चिपक रही है जो इतनी अच्छी नहीं है। अधिकतर इन लोगों में परम्परागत कुण्डलिनी में विकृति होती है जिसे हमें समझना है।

सर्वप्रथम इनमें स्वास्थ्य की खराबी होती है—शरीर में रोगों की उत्पत्ति। इस देश में मुख्यतया जनता ठण्ड आदि रोगों से अधिक पीड़ित होती हैं क्योंकि जल में कैलशियम की अधिकता है। इसी प्रकार अन्य देशों में स्थान विशेष के कारण से भी समस्या उदय होती हैं।

जैसे कि हमारे देश में भी कुछ समस्याएँ हैं। जैसे कि आपके देशों में भी (समस्याएं हैं)। भौतिक समस्याएँ, उस देश के अनुसार जिसमें आपने जन्म लिया है वर्तमान हैं। आप में से बहुतों ने एक विशेष देश में जन्म लेने का निर्णय लिया है। यही कारण है कि आप लोग यहाँ तक आश्वस्त हैं कि आप में कोई विकृति ही नहीं है। प्रत्येक देश की अपनी विभिन्नता है जिसे आपको भोगना पड़ता है जिसके फलस्वरूप आपके स्वास्थ्य में कमी आ जाती है। जहाँ तक सहजयोगियों का प्रश्न है उन्हें जानना चाहिए कि स्वास्थ्य एक महत्त्वपूर्ण वस्तु है क्यों कि यह शरीर ईश्वर का मन्दिर है। और आपको अपने स्वास्थ्य की देखभाल कर रक्षा करनी है। आप यह भी जानते हैं कि जब कुण्डलिनी का उत्थान होता है तो सर्वप्रथम जो घटना घटित होती है वह है पैरासिम्पैथेटिक में सुधार व पूर्ति के कारण से आपका स्वास्थ्य सुधार होता है। क्योंकि पैरासिम्पैथेटिक आपको प्रकाश प्रदान करती है जो सिम्पैथेटिक में प्रवाहित होता है, आपका स्वास्थ्य सुधर जाता है। आज मैं उस विषय पर विशदता से आपको नहीं बताऊँगी क्योंकि समयाभाव है—आप कोई पुस्तक पढ़िये। मैंने बहुत अधिक नहीं लिखा है। परन्तु यदि आप मेरे व्याख्यान सुनते हैं और उनमें से बहुत सारे लेखबद्ध हैं, आप उन लेखों से जान पायेंगे कि कैसे कुण्डलिनी बहुत से रोगों को दूर करने में सहायता देती है। सिर्फ उन रोगों को छोड़कर जो मानवी तत्त्वों द्वारा विकृत किये गये

हैं। यथा गुर्दे की तकलीफ़। एक आदमी सहज योग से ठीक किए गए हैं। परन्तु दूसरा आदमी जो एक मशीन पर रह चुका हो उसे कोशिश करने पर आप निरोग नहीं बना सकते। हम उसको दीर्घ जीवन दे सकते हैं परन्तु उसको निरोग नहीं कर सकते। परन्तु किसी भी हालत में रोग दूर करना आपका काम नहीं है। आपको यह बात भली भाँति दृष्टि में रखनी है। कोई सहजयोगी लोगों के स्वास्थ्य लाभ कराने का अर्थात् रोग निवारण का कार्य नहीं कर सकते। वे मेरा फोटोग्राफ़ प्रयोग में ला सकते हैं। परन्तु आप रोग निवारण का काम नहीं कर सकते क्योंकि इसका आशय यह होता है कि आप महान् उदार, हितैषी एवं परोपकारी हैं। मैंने ऐसे बहुत-से पुरुष देखे हैं जो आरोग्य बनाने के लिये इतने अधिक पीछे पड़ जाते हैं कि वे अपने आपको भुला देते हैं। उन्हें इतना भी ध्यान नहीं रहता कि इस अपनी आरोग्य करने की धुन में स्वय पकड़ में आकर बाधाग्रस्त हो गये हैं और वे अपने आपको कभी भी आरोग्य नहीं बना पाते, और अन्तिम रूप से मैंने पाया है कि वे सहजयोग से बाहर निकल जाते हैं। परन्तु फोटोग्राफ की सहायता से आप लोगों को आरोग्य कर सकते हैं। आप यह न समझें कि यह आपका कर्त्तव्य है अथवा यह कि आप महान् भौतिक हितैषी हैं। नहीं, आप नहीं हैं। आप एक आध्यात्मिक हितैषी हैं, परन्तु एक अप्रधान रचना की तरह मानव देह में सुधार आ जाता है। क्योंकि यदि प्रभु ईसा को जागृत करना है, यदि ईश्वर को इस शरीर में आना है तो इस शरीर को भी स्वच्छ सुथरा बनाना पड़ेगा। यह कार्य कुण्डलिनी द्वारा सम्पन्न होता है। परन्तु यह अस्पतालों की तरह अलग होकर काम नहीं करता है।

मैंने ऐसे बहुत-से लोग देखे हैं जो अरोग्यता प्रदान की शक्ति के पीछे पागल बने और नियमित रूप से हस्पतालों में जाना प्रारम्भ कर दिया और अस्पतालों में ही अपना सब कुछ गँवा बैठे। यहाँ तक कि वे प्रोग्रामों में भी भाग नहीं लेते थे। वे मुझे देखने भी नहीं आते थे। यह ईश्वर पथ में सब से बड़ी रुकावट है, यह एक व्याधि है शारीरिक पीड़ा है। और शारीरिक पीड़ाएँ भी आपको अत्यधिक वेदना नहीं देंगी। यदि आपकी कोई समस्या है तो आप उसे भूल जाइये। क्रमानुसार आपकी दशा में सुधार आता जायेगा। कुछ लोगों के लिये यह काफ़ी समय सुधारने में ले जाती है। फिर भी मुख्य बात यह है कि अपनी आत्मा में रहें, सन्तुष्ट रहें। बारम्बार आग्रह न करें कि माँ हमें आरोग्य करें, आरोग्यता प्रदान करें। परन्तु कहना चाहिये कि माँ हमें आध्यात्मिक जीवन में स्थापित रखिये। आप स्वतः स्वेच्छानुरूप से आरोग्य हो जायेंगे। कुछ पुरुषों के साथ कुछ अधिक समय लग जाने की सम्भावना है। पर कोई बात नहीं क्योंकि आप जीवन भर रोगी रहे हैं फिर यदि उसमें कुछ और अधिक समय लग जाता है तो परवाह न करें। और बताये गये तरीक़ों का इस्तेमाल करते रहें जो हमने विभिन्न रोगों के शमन के लिये बताये हैं; प्रयुक्त किये हैं। विशेषतया इस देश में जिगर व्याधि और गठिया, वायु आदि व्याधियाँ अधिकतर फैली हैं जो लोगों को व्यग्र कर रही है। हमारे पास इन सब रोगों के निवारण के उपाय हैं जिसे हमें इस शरीर रूपी मन्दिर की देखभाल के लिये अपना प्रधान कर्त्तव्य समझकर सतत प्रयत्न करते हुए कार्यान्वित करना है। पर यही आपकी जिन्दगी का लक्ष्य नहीं होना चाहिये। वह एक अत्यन्त लघु अंश स्वच्छीकरण का है जैसे कि तमाम जगह स्वच्छ कर आप बाहर आ जाते हैं। आप मुझसे पूछ सकते हैं कि यह शुद्धि आप क्यों करती हैं? जैसा कि हमने देखा है बहुत-से लोगों को जब हम ओक्सटेड में थे। वहाँ हमने देखा कि प्रत्येक आदमी प्रत्येक वस्तु को पालिश कर रहा था और लॉन को भी अच्छी तरह से सँवारा था। प्रत्येक वस्तु को उन्होंने बहुत अच्छी तरह सँवारा सजाया था कि उनके घर में एक चूहा

भी नहीं घुस सकता था। महीनों तक लगातार मैंने किसी को भी अन्दर जाते अथवा बाहर आते नहीं देखा था। वे ऐसे प्रबुद्ध पति-पत्नी थे। विशिष्ट प्रकार के व्यक्ति थे। मुझे नहीं मालूम वे क्यों सफ़ाई और सुथरेपन एवं स्वच्छता के प्रति सजग थे, यहाँ तक कि प्रत्येक वस्तु के लिये पूर्ण सजग थे, यहाँ तक कि वे पति पत्नी परस्पर वार्तालाप करते भी नहीं देखे गये थे। मैंने उन्हें स्वयं देखा है। हमारे मकान के अलावा सात मकान थे। वे सब के सब आश्चर्यचकित थे कि कितने सारे पुरुष, स्त्री हमारे यहाँ आते-जाते हैं। उन्होंने उत्सुकता से पूछा कि क्या आपका "मुक्त घर" है अर्थात् सबके आने-जाने के लिये खुला है। मैंने कहा कि हाँ यह खुला घर है। वे समझ नहीं पा रहे थे कि हमारे में क्या गड़बड़ी है। कोई भी उन पॉलिश की हुई वस्तुओं को देख न पा सकेगा अथवा न कोई अन्य वस्तु को। यही कारण है कि हम इतनी दूर तक नहीं जाते कि यह एक वास्तव में सहजयोग हो जाता है और शेष जो ईश्वर के हेतु परम महत्त्व की वस्तु है। स्वास्थ्य बहुत महत्त्वपूर्ण है, पर ध्यान सदैव आत्मा पर ही केन्द्रित होना चाहिए। यह आपकी आत्मा पर होना चाहिए, क्योंकि यह आपका ध्यान ही है जो जहाँ-तहाँ चारों दिशाओं में दौड़ता रहता है और वहीं चिपक जाता है। आपको इसे सक्रिय होने की छूट दें और यह अपना कार्य करेगा।

दूसरी रुकावट जो मैं अनुभव करती हूँ वह है अकर्मण्यता अर्थात् वे लोग जो इसे कार्यान्वित ही नहीं करना चाहते। वास्तव में जो लोग बेकार के आदमी हैं, जो आत्म-साक्षात्कार प्राप्त करना नहीं चाहते हैं, उनको भुला दें। उनके विषय में विचार नहीं करना चाहिये। परन्तु साक्षात्कार पाने के पश्चात् भी लोगों के लिये यह एक समस्या बन जाती है कि वे इस पर संलग्न होकर काम नहीं करना चाहते। वे आलसी हैं, साधारण शब्दों में वे सुस्त हैं। आश्चर्य है कि वे इस देश में प्रचुर संख्या में वर्तमान हैं। मेरा अभिप्राय है कि किस प्रकार आपके देश के लोग जर्मनी में गये और वहाँ जाकर उस चालकरहित वायुयान बनाकर बेचने वाली फ़ैक्टरी तथा उसमें प्रयुक्त समस्त मशीनरी को ध्वस्त कर दिया था। यह दृश्य मैंने एक दिन एक पिक्चर में देखा था। और उन्होंने वहाँ की प्रत्येक वस्तु को विध्वन्स कर दिया था। कदाचित् वे समझते हों कि हमारे बच्चे यह सब देखकर प्रसन्न होंगे।

परन्तु सहजयोग में हमें सावधान रहना है। वास्तव में जब लोग सहजयोग में प्रवेश करते हैं तो क्या घटना घटित होती है? वे अपना साक्षात्कार पा जाते हैं। वे शीतल लहरी को प्राप्त करते हैं, और फिर खो देते हैं। इसका कारण है कि वे इस पर जमकर कार्य नहीं करते। यह एक और अकर्मण्यता का खतरा है। जब यह खो जाती है तो एक वर्ष के पश्चात् वे पुनः आते हैं। कहते हैं कि "माँ हम इस में विश्वास नहीं करते। परन्तु मेरे आमाशय (stomach) में पीड़ा है। क्या आप उस पीड़ा का निवारण करेंगी? आप अपनी इतनी शक्तियों से सम्पन्न होते हुये भी आप बेकार के आदमी बन जाते हैं। फिर यहाँ मेरा समय नष्ट करने आ जाते हैं। ये सब शक्तियाँ आपके ही अन्दर हैं। यह आप की सम्पत्ति है। यह आपकी आत्मा की सम्पत्ति है जो आन्तरिक में आपकी देखभाल करती है। वह आपके प्रादुर्भाव के लिये बाधित है। परन्तु ऐसी रुकावटों के कारण, जो आप स्वीकारते हैं, यह नहीं हो पाता। यह अकर्मण्यता है, हम कह सकते हैं कि जो इसे कार्यान्वित नहीं करता है। जो नहीं जानने की, समझने की कोशिश करता कि सहजयोग क्या है, इसको कैसे कारगर बनाना है, शीतल लहरी क्या है, और यह कैसे कार्य करता है?

लोग बहुधा कहते देखे गये हैं कि यह अत्यधिक है क्योंकि वे वास्तविकता का सामना करना नहीं चाहते हैं, क्योंकि जैसे ही आपकी कुण्डलिनी ऊपर

आती है प्रकाश तुरन्त ही अन्दर आ जाता है। आँखें बन्द करने से पहले ही तत्काल आपके अन्तराल में प्रकाश फैल जाता है और आप अपने नेत्र खोलना ही नहीं चाहते हैं, क्योंकि यह अत्यधिक है। क्योंकि आप सो रहे हैं। यदि आप किंचिन्मात्र भी अपने नेत्र खोलते हैं, हे भगवान आप उस प्रकाश को सम्मुख सहना भी नहीं चाहते हैं। क्योंकि आप उस स्थिति से एक रूप हैं और आप अपने नेत्र खोलना ही नहीं चाहते हैं। निस्सन्देह कुण्डलिनी आपके नेत्रों को खोल देती है। परन्तु आप फिर अपने नेत्र बन्द कर लेते हैं। अतः यह आपकी स्वतन्त्रता है कि आप अकर्मण्यता का परित्याग कर दें। अब यह भी सामूहिक हो सकती है। मैं इतना आपको बता सकती हूँ कि यह एक बड़ा भारी रोग है, यह फैलता है। यथा पति-पत्नी हैं, पत्नी एक जैसी ही है इसके अतिरिक्त कि पति अपनी पत्नी को ऊपर उठाये वह उसमें अनुरक्त (आसक्त) हो जाता है विशेषतया पश्चिम में। भारत के बिल्कुल ही विपरीत जहाँ पति, पत्नी पर पूर्णरूप से अपने अधीन रखता है। वह भी अपने पति के अधीन हो अनुरक्त रहती है। सो क्या होता है इन दोनों में से जिसने भी पाया उसने खो दिया है। बल्कि वे दोनों बहुत अच्छी तरह से साक्षात्कार पाते हैं और बहुत अच्छी तरह से रहते। उनमें से जिसने अच्छी तरह से साक्षात्कार पाया है वह अपनी शासन की इच्छा को नियन्त्रण में रखता है। वह सोचता है कि मेरे आँखें हैं देखने के लिये। मुझे देखना चाहिये। मुझे अपनी आत्मा को अवसर देना चाहिये। यदि वे उसे स्वीकार करते हैं तो यह काम करती है और फिर वे द्वितीय सोपान पर जा पहुँचते हैं। प्रत्येक वस्तु जेट की तरह से नहीं हो सकती कि आप यहाँ बैठे हैं और दूसरे ही क्षण आप चाँद पर जा पहुँचते हैं।

यदि आप चाँद पर जा भी पहुँचे, आप तीसरे खतरे अर्थात् संशय से आरम्भ कर सकते हैं। मुझे मालूम नहीं कि इस संशय के भ्रम समुदाय को किस तरह से बयान करूँ। उदाहरणार्थ आप सब में से बहुत सारे जो यहाँ पर एकत्र हुये हैं, जिनका प्रतिशत मैं नहीं बता पाती, दूसरे दिन आते हैं और एक बड़ा व्याख्यान देकर कहते हैं कि मुझे अभी भी सन्देह है, संशय है।

क्या यह बुद्धिमत्ता की निशानी है? किसको आप क्या संशय करते हैं? आपने अब तक क्या पाया है? क्या वह आपका अहं है जिस पर कि मैं ने व्याख्यान पर व्याख्यान दिया है। यही श्रीमान् अहं हैं जो संशय करते हैं। क्योंकि वह नहीं चाहता कि आप उस सत्य सनातन को खोज पा सकें। आप अपने अहं से इतने अधिक प्रताड़ित हैं—परिचायक हैं कि आप उसे खोज पा नहीं सकते क्योंकि ये श्रीमान अहं आपका जीवन भर मार्ग दर्शन करते रहे हैं। अब आप संशय करना चाहते हैं। सशय क्या? आपके संशय क्या हैं? आप ठण्डी हवा का अनुभव अच्छी तरह से करते हैं। फिर बैठ जाइये। विश्राम कीजिये। यह बिल्कुल उसी तरह से है कि जैसे कोई किसी कॉलिज में प्रवेश पा रहा हो अथवा यूनिवर्सिटी में बैठे हों और शिक्षक पढ़ाते हों कि यह डायग्राम है, जो मैं आपको देता हूँ। छात्रगण कहते हैं कि हम संशय करते हैं। वास्तव में शिक्षक क्या कहेगा।

परन्तु वे नहीं कहेंगे क्योंकि उन्होंने शुल्क दिया हुआ है उन्होंने उसके लिये शुल्क भुगतान किया है। चाहे ड्रामा कितना ही भयानक क्यों न हो फिर भी हमें उसमें से गुजरना है क्योंकि हमने शुल्क जमा किया है और आप उसमें से गुजर कर पार करते हैं क्योंकि आप ने शुल्क जमा किया है। अब क्या करें? परन्तु सहजयोग में आप को कुछ देना नहीं पड़ता है। मैंने बहुत सारे महामूर्खता का व्यवहार करने वाले देखे हैं जो बहुत-से गुरु धारण करते हैं। जैसा कि कोई-कोई कहते हैं कि "मैं आपको उड़ना सिखाता हूँ" वे इसके लिये भी तैयार हो जायेंगे। वे धन देंगे और किञ्चित्मात्र भी सन्देह नहीं करेंगे।

परन्तु क्या वह व्यक्ति जो यह सब प्रचार कर रहा है, क्या उसने हवा में उड़ान की है ? क्या आपने उसे कहीं भी हवा में उड़ते हुये देखा है ? कृपया उस व्यक्ति से हवा में उड़ने के लिये कहिये। वे कुण्डलिनी का ऊपर उठना देखेंगे और उसे स्पन्दन करती हुई भी देख पायेंगे। उसका उठना और नीचे आना भी देखकर वे संशय करेंगे। अब आप कौन हैं ? आप कहाँ तक पहुँच पाये हैं ? आप संशय क्यों करते हैं ? आप किस पर क्या सन्देह करते हैं ? आपने अपने सम्बन्ध में क्या जाना है ?

आप कृपा करके इस स्थिति पर विनम्रता धारण कीजिये अपने हृदय को भी विनम्र बनाइये, कि मैंने अभी तक अपने को नहीं जाना है। मुझे अपने आपको जानना है। मैंने अभी तक उस शाश्वत को नहीं पाया है। किस उपकरण के साथ मैं संशय कर रहा हूँ। यही सबसे बड़ी रुकावट कुण्डलिनी के जागरण में है। उसके जागरण के पश्चात् भी संशय बना रहता है।

चतुर्थ रुकावट को हम प्रमाद के नाम से पुकारते हैं। यह वह है जिससे हम सदैव हड़बड़ाते रहे हैं। कितना मूर्खतापूर्ण प्रश्न है। मेरा आशय है कि कुछ वस्तुएँ ऐसी हैं जिन्हें आपको पालन कर अनुसरण करना है। यदि आप सड़क पर जा रहे हैं, आपको इसकी आदत सी पड़ी हुई है नियम से ड्राइव करने की। सो आप सदैव ही गलत साइड को मोड़ लेते हैं। परन्तु लन्दन में आपको हिरासत में ले लिया जायेगा। इसी प्रकार से आप नियमानुकूल जा रहे हैं। परन्तु अब आप लन्दन में हैं। अतः अच्छा होगा यदि आप लन्दन वालों की परिपाटी अपनायें। अतः आप नक्शे में मार्गों का अध्ययन करें, और आवश्यकीय नियमों का पालन करें और उनके अनुसार चलने का प्रयत्न करें। परन्तु आप तो संशय में पड़े हैं। यही प्रधान बात है। फिर आप इसका अनुसरण करना नहीं चाहते हैं। अतः प्रमाद ही जो एक त्रुटि है, आड़े आ जाती हैं। क्योंकि कुण्डलिनी जागरण एक मुफ्त का उपहार है हर एक के लिये जो यहाँ पर आता है। चाहे जो भी कोई हो। जहाँ कहीं भी हो नरक में अथवा स्वर्ग में अथवा अन्य किसी स्थान पर या बहुत-सी ऐसे अकरणीय घटना घटित कर चुका हो। परन्तु हम दोष सहज योग को देंगे। हम अपने अन्तराल में घटित स्वेच्छा अनुरूप घटना को दोषी ठहरायेंगे। हम अपने आपको दोषी नहीं ठहरायेंगे, कि हमें यह गलती नहीं करनी चाहिये थी। कोई बात नहीं यदि मैंने गलती की है तो मैं ही इसका सुधार करूँगा—सब कुछ ठीक हो जायेगा।

माँ निस्सन्देह क्षमाशील हैं, परन्तु कभी-कभी क्षमा भी बेकार सिद्ध होती है। क्योंकि जब तक आप अपनी गलती का आभास नहीं करोगे तो जिस गलत रास्ते पर आप पड़ गये हैं उसके ही अभ्यस्त बन जायेंगे। अतः मार्ग के नियम समझ लेने अनिवार्य हैं। यही हमारे सामने प्रसाद के रूप में उपस्थित होता है। तत्पश्चात् हमारे सामने एक और परम्परागत समस्या आ खड़ी होती है। इसको भ्रम दर्शन कहा जाता है। अंग्रेज़ी में इसको हैल्यूसिनेशन (hallucination) कहते हैं। हम भ्रमदर्शन करना आरम्भ कर देते हैं। विशेषतया वे पुरुष जो एल. एस. डी. आदि ड्रग प्रयोग करते हैं। वे मुझे नहीं देख पाते। कभी-कभी वे प्रकाश की छटा देख पाते हैं अथवा भविष्य का भ्रमदर्शन करते हैं या भूत कालिक दृश्य। वे मुझे किसी और ही रूप में देखते हैं। यदि आप मुझे स्वप्न में देखें तो यह अच्छा है। परन्तु आप और कुछ देखने लगते हैं जिसे भ्रमदर्शन कहते हैं। भ्रम का अर्थ (illusion) माया और आप भ्रम का विकास करना आरम्भ कर देते हैं। सबसे निकृष्ट पक्ष इसका यह है कि लोग इसके विषय में असत्य बोलना आरम्भ कर देते हैं। मैं हरएक के विषय में जानती हूँ। जब भ्रमदर्शन का आरम्भ होता है तो यह वाइब्रेशन्स के लिये भी अत्यधिक खतरनाक वस्तु है।

कुछ पुरुष तो अपने विषय में पूर्णरूपेण निश्चित् होते हैं, मैं वह देखती हूँ। और वे समस्त संसार को बताते हैं। और वे हरएक पर शासन करना चाहेंगे यह कहते हुए कि अमुक की वाइब्रेशन्स सही नहीं हैं, उसकी वाइब्रेशन्स खराब हैं, जब कि उन पर उनको कोई दक्षता नहीं है। अब मुझे काफ़ी सावधान होना होता है। मैं एक शिक्षक की भाँति वार्तालाप नहीं कर सकती। अतः मैं कहती हूँ कि आप अपने को बन्धन दें और अपने हाथ मेरी ओर फैलायें और फिर अपने आपको स्वयं देखिये।

यदि अकस्मात् ही वे जान जाते हैं कि मैंने जान लिया है कि आप असत्य बोल रहे हैं, फिर वे उनके नष्ट होने में कोई सन्देह नहीं रहता। मैं उनके असत्याभास को अपने में ही सीमित रखती हूँ। आप देखते ही हैं कि मैं कितनी सावधान रहती हूँ क्योंकि मैं जानती हूँ कि वे कितनी फिसलने वाली भूमि (स्थिति) पर हैं। तब भी मैं उन्हें अधिक रूखे पन से आक्षेप नहीं करती हूँ। फिर भी हो जाता है। परन्तु आपको भली भाँति जानना चाहिये कि यह हमारे हित के लिये है जिससे हम अपने सत्य पर दृढ़ रहें। और हम अपनी ही अलग विचारधारा में न बह जायें।

फिर जो बात सामने आती है वह है विषयचित्त जिसमें आपका चित्त उन वस्तुओं के द्वारा आकर्षित होता है जो आपके पूर्व आसक्तियाँ क्या हैं तथा जहाँ आपका ध्यान केन्द्रित रहा है। आप क्रिकेट की ओर आकर्षित हैं, परन्तु आपको यह बीमारी अपने आप नहीं लगानी चाहिये। मेरा अभिप्राय यह है आप इसमें इतने ओत-प्रोत न हो जायें कि आप क्रिकेट का बैट ही बन जायें और किसी काम के भी न रहें। अन्य सब बातों के लिए आप मृतक समान हो जाते हैं। किसी वस्तु के लिये भी इतनी आसक्ति (सनक, झक्कीपन) आ जाये कि आपका ध्यान एक ग़लत वस्तु पर केन्द्रित हो जाये तथा आप कहीं के भी न रहें। यह सहजयोगी जनों के लिये हितकारी नहीं है।

आज का व्याख्यान विशेषतया सहजयोगियों के लिये ही है। मैं इङ्गित कर रही हूँ कि अपनी साक्षात्कार की सिद्धि को स्थायित्व प्रदान करने के मार्ग में किन निहित बाधाओं का, खतरों का सामना करना पड़ता है। यह समझ लेना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

अब दो और बड़े खतरे सामने खड़े दिखाई देते हैं जिनको हम इनके अतिरिक्त भोगते हैं। लोग पकड़ में आ जाते हैं अर्थात् बाधाग्रस्त हो जाते हैं और अपने मस्तिष्क में विचारों का अम्बार लगा लेते हैं। वे गीत गाना आरम्भ कर देते हैं। मुझे ऐसी हरकतों से व्याकुलता होती है। मुझे मालूम नहीं कि मुझे क्या कहना चाहिए। मैं देखती हूँ कि उन के माध्यम से कोई राक्षस बोल रहा है। परन्तु मेरी कठिनाई यह है कि मैं उनको कैसे अवगत कराऊँ। यहाँ तक कि वे मेरी प्रशंसा करते हैं। मैं जानती हूँ कि यह क्या है। परन्तु वे मेरे निकट आ कर निवेदन करते हैं कि माँ हम आपकी स्तुति में गीत गाना चाहते हैं। मैं उन्हें हाँ के अतिरिक्त और कुछ कह भी तो नहीं सकती हूँ। क्योंकि वे नहीं जानते हैं कि उन्हें यह ज्ञान कहाँ से प्राप्त हुआ है। यह तो कोई और ही है जो यह सब कर रहा है। इन सब समस्याओं के कारण ही आप लोग पकड़ में आकर बाधाग्रस्त हो जाते हैं। विगत दिन एक सज्जन मेरे पास आये और कहने लगे कि माँ मैं अपने विषय में अत्यधिक आश्वस्त हूँ, वास्तव में पूर्ण विश्वास में हूँ। मैं कुछ उच्छृङ्खल, हिंसात्मक कार्य करने को बाधित हूँ। और उसने वह (जघन्य) कृत्य किया। पहले तो उसने प्रेतबाधा को अपने अन्दर आता हुआ देखा, तब यह काम किया और किया भी बुरी तरह से। मैं जानती हूँ कि उस के उस काम से हर कोई नाराज़ था। परन्तु मैं नहीं थी, क्योंकि जो भी कुछ किया गया वह पकड़ की

स्थिति में किया गया था। आप नहीं जानते लोग 'पकड़' के वशीभूत होकर क्या-क्या अनर्थ कर डालते हैं जो पागलपन से भरे होते हैं। मेरा आशय है कि उनको तो पागलखाने में जाना चाहिये परन्तु सहजयोगी होने के कारण वे यह सब काम करते हैं। परन्तु वे वहाँ नहीं हैं जहाँ उनको होना चाहिये था।

दो अवस्थाएँ ऐसी हैं जिनमें कुण्डलिनी चढ़कर भी गिर जाती है। यह व्यक्ति में परम्परागत खतरा रहता है। बहुत-से लोगों ने मुझसे पूछा है कि क्या माँ हमें साक्षात्कार प्राप्त हो जाये तो यह स्थिर रहेगा। वह वहाँ ठहरती है, अंश मात्र। कभी कभी एक क्षुद्र अंश के रूप में। कभी-कभी समस्त वस्तु ही वापस आ जाती है। यह वापस खींच ली जाती है। यदि ऐसा होता है तो आप कहते हैं, हमें संशय है अथवा हम संशय करना आरम्भ कर देते हैं। यह कहाँ लिखा है कि आपको ऊपर उठाया जायेगा और आपको उच्च बैठा दिया जायेगा। चाहे आपकी समस्याएँ कुछ भी क्यों न हों। क्या यह सम्भव है? यहाँ तक कि जब मुझे भारत जाना होता है तो मुझे इनोक्युलेशन्स, वैक्सिनेशन कराने पड़ते हैं। मुझे अपने पासपोर्ट के लिये साक्षात्कार देना पड़ता है। जब आपको ईश्वर के साम्राज्य में प्रवेश पाना है फिर आपका निर्णय किया जायेगा, आपको परीक्षा में खरा उतरना होगा, यदि आप को कृपाङ्क देकर यान में बैठा भी दिया जाये तो भी आपको नीचे उतारा जा सकता है। कुछ साधकों के साथ ऐसा होता है कि कुण्डलिनी नीचे आ गिरती है यह अत्यन्त खतरनाक चिन्ह है। यह किसी समस्या के कारण हो जाता है यथा किसी मिथ्या गुरु के पास जाने से, गलत स्थानों पर जाने से, प्रेतात्माओं के पास जाने से अथवा जादू टोना, तन्त्र आदि करने से, हर किसी के सामने मस्तक नवाने से जो अवतार नहीं हैं। मिथ्या देवी देवताओं की आराधना करने से, पागलपन के रीतिरिवाज अपनाने एवं उत्सव मनाने से, गलत समय पर व्रत उपवास आदि करने से। व्रत उपवास की उपयोगिता न समझकर ग्रहण करने से, व्रत उत्सव समारोह को न समझकर मनाने से, अपने चक्रों और सम्बन्ध आदि की स्थिति न समझने पर और सहजयोग का पूर्णतया समन्वय (synthesis) हृदयङ्गम न करने से यह पतन होता है। आपने देखा होगा कि बहुत-से जिज्ञासुओं की कुण्डलिनी उत्थान करती है और तत्काल ही नीचे गिर जाती है। यह अत्यन्त ही खतरनाक चीज हैं। वास्तव में यह स्थिति अत्यन्त दुखदायी है।

अन्तिम खतरा, जो आपको जानना आवश्यकीय है वह है कि जब आप अपने को ही भगवान समझना आरम्भ कर देते हैं अथवा अपने को किसी का अवतार की भाँति मनाना आरम्भ कर देते हैं। यही सबसे भयङ्कर खतरा है। फिर आप क़ानून अपने हाथ में लेना आरम्भ कर देते हैं। और लोगों को आज्ञा देते हैं और उच्छृङ्खलता के कार्य प्रारम्भ कर देते हैं और अपने आपको पूर्ण सन्तुष्ट, आश्वस्त समझने लगते हैं। यह भी एक महान् खतरा है। विनम्रता ही एक ऐसा मार्ग है जिससे यह जाना जा सकता है कि आपके सामने एक महासागर है। आप नाव में तो सवार हो गये हैं अच्छी तरह से परन्तु आपको काफ़ी कुछ जानना शेष है। आपको काफ़ी मात्रा में समझना शेष है। और आपको अपने ध्यान पर स्थिर होना है, अपने चित्त में स्थिरता लानी है और उसे जागृति की ओर अग्रसर करना है।

आपको इसको अभी इस प्रकार से हल करना है जिससे आप सम्पूर्ण सहजयोगी के रूप में स्थापित हो जायें जिससे सामूहिकता आपकी आत्मा का एक अङ्ग बनकर रह जाये जिससे आप में लेशमात्र भी संशय शेष न रहे, निर्विचारकी चेतना से आप संशय-रहित चेतना में छलाँग लगाइये। जब तक आप में यह घटना घटित नहीं हो जाती—यह 'मेरा' नहीं,

वरन् एक स्थिति है, जिसमें जब कभी भी आप अपना हाथ ऊपर उठायेंगे आपकी कुण्डलिनी ऊपर उठ जायेगी। जब तक कि आप उस स्थिति की उपलब्धि नहीं कर लेते तब तक इसमें लगे रहिये—उद्देश्य प्राप्ति में, इसमें आलस्य-प्रमाद न कीजिये। आपको अपने चारों ओर देखना है। लोगों से मिलें, उनसे वार्तालाप करें। इस विषय में जितनी अधिक बातें आप करेंगे उतना ही अधिक आप अग्रसर होंगे। आप इसे जितना अधिक भी दान करेंगे यह उतनी ही अधिक प्रवाहित होंगी। जितना आप घर में बैठेंगे, और सोचेंगे कि मैं घर पर ही पूजन कर रहा हूँ, उतना ही आप खोयेंगे। उसमें स्थिरता आयेगी, बहाव में रुकावट आयेगी। आपको इसे दूसरों को देना है। आपको उसे अधिकाधिक लोगों में वितरित करना है, हजारों की संख्या में लोग इसे पाने को लालायित हैं। यही कारण है कि यह इतना महत्त्वपूर्ण है कि इस विचार से कि समस्त संसार की शक्तियाँ आप में विकसित हैं आप मदोन्मत न हो जायें। कभी नहीं। कब यह कक्तियाँ आप में प्रगट होती हैं आप जानते भी नहीं मेरा अभिप्राय है, सूर्य की कल्पना कीजिये, यह कहते हुए कि मैं सूर्य हूँ। क्या वह कहता है कि वह सूर्य है ? इसमें क्या है ?

यदि आप जानते हैं और सूर्य से पूछते हैं कि "क्या आप सूर्य हैं ? वह कहेगा कि हाँ—निश्चय से मैं हूँ। इस सम्बन्ध में मैं क्या कर सकता हूँ। यह एक साधारण-सी बात है। आप एक सीधे-सादे पुरुष बन जाते हैं। बिल्कुल सरल साधारण। कोई छुपाव नहीं, कोई जाल नहीं, आप इस प्रकार के हैं। सो यदि कोई आप से ऐसे विचित्र सवाल करता है तो आप उससे कहिये कि उसमें पूछने की क्या बात है ? यह सत्य है। मेरा अभिप्राय है कि मैं एक सिद्ध आत्मा हूँ। निस्सन्देह हूँ। इससे क्या हुआ। इस भाव से हमें सहजयोग में जाना है। मुझे यह कहना चाहिये कि मैं आश्चर्य में हूँ कि यह चमत्कार कैसे होता है। और यह कार्य करता रहता है। परन्तु यह आप हैं जो इसे अपने आप के अन्दर स्थापित कर सकते हैं।

अब आप में से कुछ परिधि पर हैं। हम उनको परिधि पर ही रख छोड़ते हैं। इसको आप भली भाँति जानते हैं। उनमें से कुछ केन्द्र में आते हैं। और उनमें से भी बहुत कम संख्या में ऐसे हैं जो भीतरी वर्ग में आते हैं। सब ऐसी स्थिति में हैं जिस में वे स्पर्श रेखा के बाहर फेंके जा सकते हैं-आप समझ नहीं सकते हैं कि एक सहजयोगी का ऐसा क्यों होता है। यदि आपकी दृष्टि किसी ऐसे सहज योगी पर पड़े जो स्पर्श रेखा की तरह बाहर जा रहा हो तो आप समझें कि आप भी ऐसा ही कर सकते हैं अर्थात् आपके साथ भी यही घटित हो सकता है। अतः सावधान रहो।

अतः आज के दिन इस सन्धि बेला में जब कि हम प्रभु ईसा के जीवन की एक महान घटना को त्यौहार के रूप में मना रहे हैं। हमें यह जानना है कि ईसा प्रभु हमारे अन्तराल में प्रगट हैं। और यह बेथलहेम भी हमारे अन्दर ही स्थित है। आप को बेथलहेम की तीर्थयात्रा करने की आवश्यकता नहीं है। ये हमारे ही अन्दर स्थित हैं। ये वहाँ हैं जहाँ हमें इनकी देखभाल करनी है। यह अभी बाल्यावस्था में हैं। आपको इनका आदर करना है। और आपको इसकी देखभाल करनी है। सो प्रकाश वास्तव में फैलता है और लोग जान जाते हैं कि आप एक सिद्ध आत्मा हैं। कोई भी सन्देह नहीं करेगा कि आप नहीं हैं।

भगवान आप सबका कल्याण करें !

सहजयोग और शारीरिक चिकित्सा (२)

दमा (Asthma)

यह रोग वाम पार्श्व में दोष के कारण होता है। इसमें फेफड़े शिथिल पड़ जाते हैं जिससे साँस लेने में कठिनाई होती है। विपत्ति की आशङ्का की भावना अथवा पिता के साथ बिगड़े सम्बन्ध इस रोग का मूल कारण हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में क्रमशः मध्य हृदय अथवा दायाँ हृदय बाधाग्रस्त हो जाते हैं। ऐसी हालत में Red Blood Corpuscles (लोहिताणु) की अपेक्षा White Blood Corpuscles (श्वेताणु) की संख्या अधिक हो जाती है जो बायीं नाभि और स्वाधिष्ठान पर पकड़ (बाधा) के कारण होता है।

क्षय रोग (Tuberculosis)

यह रोग भी वाम पार्श्व में दोष के कारण होता है। यह कुपोषण (mal-nutrition), प्रोटीन की कमी और वाम पार्श्व के अन्य विकारों के कारण उत्पन्न होता है। वाम नाभि, स्वाधिष्ठान और मध्य हृदय चक्र बाधा-ग्रस्त हो जाते हैं।

उपरोक्त बाधाओं के रोगियों को दायाँ पार्श्व को उठाना चाहिये और दैवी कृपा को वाम पार्श्व में प्रदान करना चाहिए और जल उपचार करना चाहिये। उक्त क्रिया में बायाँ हाथ फोटो की ओर और दायाँ हाथ उठा हुआ रखना चाहिये। पोषक आहार का सेवन करना चाहिए और बाधा-ग्रस्त चक्रों को चैतन्य-लहरें प्रदान करनी चाहिएँ।

जुकाम (Common Cold)

इस रोग में बायीं विशुद्धि अथवा दायीं विशुद्धि बाधा-ग्रस्त होती हैं। हंसा चक्र भी कुप्रभावित होता है। यदि वाम विशुद्धि में बाधा है तो नाक में श्वास-अवरोध हो जाता है और यदि दायीं विशुद्धि में बाधा है तो नाक बहती रहती है। यदि नाक बह रही है तो लकड़ी के कोयले पर अजवायन जलाकर उसके धुएँ को सूंघना चाहिए। इसके अतिरिक्त तुलसी के पत्ते, अजवायन, अदरक और चीनी (शक्कर) की चाय लेना चाहिए और विश्राम करना चाहिए। यदि नाक अवरुद्ध है तो नाक में परिष्कृत मक्खन डालना चाहिए।

फेफड़े तथा गले की व्याधियों से बचने के लिये लिये हमें स्नान के विषय में अपनी धारणायें बदलना आवश्यक है। ग्रीष्म ऋतु में शीतल जल में स्नान अच्छा रहता है। सर्दी के मौसम में गुनगुने पानी में स्नान करना चाहिये और स्नान के बाद दो-तीन घण्टे बाहर की ठण्ड से बचना चाहिए।

पीलिया (Jaundice)

इस रोग में दायीं नाभि और स्वाधिष्ठान चक्र बाधा-ग्रस्त होते हैं। डाक्टरों के लिये अति दुःसाध्य इस रोग की चिकित्सा के लिये हमारी प्रिय माता जी एक अत्यन्त सरल औषधि का आदेश करती हैं। उसके अनुसार साधारण जल के स्थान पर ताजे मूली के पत्तों को पानी में उबाल कर और इस उबले पानी में शकरकन्दो की शक्कर मिलाकर तीन दिन प्रयोग करना चाहिए। तले पदार्थ, प्रोटीन इत्यादि का त्याग करना चाहिए। रोग तीन दिन में समाप्त हो जाता है। बायाँ हाथ पेट पर रख कर दायाँ हाथ श्री माता जी के फोटो की ओर फैला कर दस बार—"माँ, आप मेरी गुरु हैं" मन्त्र का उच्चारण करना चाहिए।

मधुमेह (Diabetes)

इस रोग में दायीं नाभि और स्वाधिष्ठान चक्र बाधा-ग्रस्त होते हैं। प्रति दिन १०८ बार बायां पार्श्व (इड़ा नाड़ी) को उठाना चाहिये और दैवी कृपा को दायें पार्श्व (पिंगला नाड़ी) में प्रदान करना चाहिये। दाहिना हाथ अग्न्याशय (pancreas) पर रखकर जल उपचार करना चाहिये। इन रोगियों को प्रचुर मात्रा में चैतन्य (vibrated) लवण का सेवन करना चाहिये और श्री माताजी के फोटो के सामने "माँ, मैं अपना स्वयं गुरु हूँ" मन्त्र दस बार उच्चारण करना चाहिये। पूर्व योजनाएँ बनाते रहने की आदत का त्याग करना चाहिये।

अनिद्रा (Insomnia)

यह रोग दायें पार्श्व में अत्यधिक क्रिया के कारण होता है। बायें पार्श्व को उठाना चाहिये और ईश्वर कृपा को दायें पार्श्व में प्रदान करना चाहिये। निम्न मन्त्र का उच्चारण करना चाहिये :

या देवी सर्व भूतेषु निद्रा रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

स्मरण शक्ति का अभाव (Lack of Memory)

इसके लिये बायें पार्श्व को उठाना चाहिये और ईश्वर कृपा को दायें पार्श्व में प्रदान करना चाहिये। निम्न मन्त्र का तीन बार उच्चारण करना चाहिये :

या देवी सर्व भूतेषु स्मृति रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

कमर दर्द (Spondylitis)

यह रोग बायें अथवा दायें पार्श्वीय नाड़ी संस्थान में समस्या (बाधा) के कारण उत्पन्न हो सकता है। यह क्रमशः कुपोषण अथवा अति-क्रिया और अपने दायित्वों के विषय में अत्यधिक चिन्ता करने के स्वभाव के परिणामस्वरूप उत्पन्न होता है। उपचार के लिये पार्श्वीय नाड़ी संस्थान में असन्तुलन को ठीक करना चाहिये और प्रभावित अङ्गों को चैतन्य लहरें (vibrations) प्रदान करना चाहिये चैतन्य केरासीन की मालिश करनी चाहिए और लवण-मिश्रित गुनगुने जल में पैर स्नान करना चाहिए।

गृध्रसी (Sciatica)

यह वाम पार्श्व की समस्या होती है। इसमें बायीं नाभि और स्वाधिष्ठान बाधाग्रस्त होते हैं। बायें पार्श्वीय नाड़ी संस्थान को ईश्वर कृपा प्रदान करके असन्तुलन को ठीक करना चाहिये, प्रभावित चक्रों को चैतन्य लहरें (vibrations) प्रदान करना चाहिये, और चैतन्य-सिक्त (vibrated) केरासिन से मालिश करनी चाहिये।

With best compliments from :

M/s PATNI BROS. PVT. LTD.

22/1, SNEHLATA GANJ, INDORE (M.P.)

Phones : 34530 - 21714 Resi : 31221

Manufacturers of :

A. C. PRESSURE PIPES WITH ACCESSORIES

Registered with the Registrar of Newspapers under Regn. No. 36999/81

सन् १९८४ में परम पूज्य माताजी का महाराष्ट्र में कार्य-क्रम

१०-१-८४ से १६-१-८४	बम्बई में कार्यक्रम
१५-१-८४ से १६-१-८४	१०० विदेशी सहजयोगियों के प्रथम दल का बम्बई में आगमन (इसमें दिल्ली जाने वाले सम्मिलित नहीं होंगे)।
१७-१-८४ से १९-१-८४	वैतरणा में कार्यक्रम
२०-१-८४ से २१-१-८४	नासिक में कार्यक्रम
२२-१-८४ से २३-१-८४	धूले में कार्यक्रम
२४-१-८४ से २७-१-८४	राहुरी में कार्यक्रम
२८-१-८४	अहमदनगर में कार्यक्रम तथा शोलापुर को प्रस्थान
१-२-८४	कोल्हापुर को प्रस्थान
२-२-८४ से ५-२-८४	कोल्हापुर, इचलकरंजी, कजल, सांगली और सदोली में कार्यक्रम
६-२-८४	मलारपेट में कार्यक्रम—सतारा में विश्राम
७-२-८४	सतारा में कार्यक्रम
८-२-८४ से ९-२-८४	पूना में कार्यक्रम
१०-२-८४	पिम्परी में कार्यक्रम तथा बम्बई को प्रस्थान
१०-२-८४ से ११-२-८४	१०० विदेशी सहजयोगियों के दूसरे दल का आगमन
१०-२-८४ से १५-२-८४	बोरडी में अन्तर्राष्ट्रीय सहजयोग शिविर तथा विवाह
१५-२-८४	विदेशी सहजयोगियों के प्रथम दल का स्वदेश प्रस्थान
१५-२-८४	दूसरे दल का वैतरणा को प्रस्थान
१६-२-८४ से १८-२-८४	वैतरणा में कार्यक्रम
१९-२-८४ से २०-२-८४	नासिक में कार्यक्रम
२१-२-८४ से २२-२-८४	धूले में कार्यक्रम
२३-२-८४ से २६-२-८४	राहुरी में कार्यक्रम
२७-२-८४	अहमदनगर में कार्यक्रम तथा शोलापुर को प्रस्थान
२८-२-८४ से १-३-८४	शोलापुर तथा पण्ढरपुर में कार्यक्रम
२-३-८४	शोलापुर को प्रस्थान
३-३-८४ से ६-३-८४	कोल्हापुर, इचलकरंजी, कजल, सांगली तथा सदोली में कार्यक्रम
७-३-८४	मलारपेट में कार्यक्रम—सतारा में विश्राम
८-३-८४	सतारा में कार्यक्रम
९-३-८४ से १०-३-८४	पूना में कार्यक्रम
१०-३-८४	विदेशी सहजयोगियों का बम्बई से स्वदेश तथा दिल्ली प्रस्थान
मार्च १९८४	दिल्ली।

सूचना : जो विदेशी सहजयोगी दिल्ली जाना चाहें वे दूसरे दल में सम्मिलित हों।

* जय माता जी *

Edited & Published by Sh. S. C. Rai, 43, Bunglow Road, Delhi-110007 and
Printed at Retnadeep Press, Darya Ganj, New Delhi-110002.
[One Issue Rs. 5.00, Annual Subscription Rs. 20.00 Foreign [By Airmail £ 4 $ 8]